हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम

मकतबा अल हसनात

हज़रत मूसा

(अलैहिस्सलाम)

मुहम्मद अब्दुल हई (रह०)

मकतबा अल हसनात

मकतबा अल हसनात प्रकाशन न० 162

ISBN 81-8314-019-X

संस्करण 2014

प्रकाशक

ए० एम० फ़हीम

मकतबा अल हसनात

3004/2 Sir Syed Ahmad Road, Darya Ganj, New Delhi- 110002 *Tel.:23271845 Fax : 41563256*
E-mail:alhasanatbooks@rediffmail.com

Printed at:

H.S Offset Printers, N.Delhi-2

मूल्य

₹ 40/-

सूची


بسم الله الرحمن الرحيم

मिस्र में बनी इस्राईल की हालत

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के हालात में आप पढ़ चुके हैं कि हज़रत ने अपने पिता हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम और अपने सब भाईयों को मुल्क शाम से मिस्र में अपने पास ही बुला लिया था। उस समय मिस्र के निवासी मुशरिक (अनेकेशवरवादी) थे यह लोग बहुत से देवताओं की पूजा करते थे उन का सब से बड़ा देवता "आमन रा" था जो सूरज का देवता था यह लोग अपने बादशाहों को देवताओं का अवतार समझते थे उन को यह समझा दिया गया था कि देवता ख़ुद बादशाह की शक्ल में ज़मीन पर उतर आता है इसी लिये उन से बादशाहों की पूजा कराई जाती थी यह अपने बादशाहों को फ़िरऔन कहते थे जिस का मतलब ही था "सूरज देवता का अवतार"।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने ख़ानदान के लोगों को उन मुशरिकों से अलग एक जगह बसाया था। हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम को भी इस की फ़िक्र थी कि कहीं उन की औलाद बुतपरस्तों के साथ मिल

कर काफ़िर न हो जाये। जिस वक़्त हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम का आख़िर वक़्त आया तो उन्हों ने ख़ासतौर से अपने ख़ानदान के लोगों को नसीहत फ़रमाई कि "देखो मेरे बाद तुम कहीं अपने ईमान को ख़राब न कर लेना और मुश्रिकाना रस्मों को अपना कर न बैठ जाना, आप ने उन सब से वादा लिया कि "वह अल्लाह के दीन पर मज़बूती से जमे रहेंगे"। इस क़िस्से का ज़िक्र अल्लाह तआला ने कुरआन पाक में इस तरह फ़रमाया है-

"जब याकूब अलैहिस्सलाम की मौत का वक़्त आया तो उन्हों ने अपनी औलाद से कहा मेरे बाद तुम किस की इबादत करोगे? तो उन्हों ने जवाब दिया, हम उस ख़ुदा की इबादत करेंगे जो आप का और आप के दादा इब्राहीम अलैहिस्सलाम, इस्माईल और इसहाक़ का ख़ुदा है, जिस का कोई शरीक नहीं और हम तो सिर्फ़ उसी की फ़रमाबरदारी (उपासना) करने वाले हैं"। *(सूरः बक़रह आयत 133)*

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को "इस्राईल" भी कहते थे इसी लिये आप की नस्ल के लोग "बनी इस्राईल" कहलाये। बनी इस्राईल के बहुत से ख़ानदान मिस्र में रहते बसते रहे, और जब उन की संख्या ज़्यादा हो गई तो यह मिस्र में एक क़ौम समझे जाने लगे। कोई चार सौ साल के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम

उस क़ौम में पैदा हुये उस मुद्दत में बनी इस्राईल की हालत बहुत ख़राब हो गई थी। एक तरफ़ तो उन का ईमान और इस्लाम कमज़ोर होता गया, दूसरी तरफ़ उन की माली हालत ख़राब होती गई, धीरे-धीरे उन की हैसियत एक ग़ुलाम क़ौम के जैसी हो गई। मिस्री लोग हुकूमत करते थे और बनी इस्राईल उन की सेवा करने वाले और ग़ुलाम बन कर रह गये थे। हर तरह से ज़लील थे हुकूमत और दौलत पर मिस्रियों का क़ब्ज़ा था, और वह बनी इस्राईल पर हर तरह के ज़ुल्म ढाते थे। उन के मर्दों और औरतों से बेगार लेते थे और इस पर भी बस न था मिस्रियों का बादशाह फ़िरऔन यह नहीं देख सकता था कि किसी तरह भी बनी इस्राईल की ताक़त और उन की संख्या बढ़े। शायद उसे यह डर होगा कि कहीं यह लोग ज़्यादा संख्या में हो जाने के बाद किसी दुश्मन से न मिल जायें और उस की ख़ुदाई का तख़्ता उलट देने की कोशिश करें। इस लिये इस ज़ालिम ने पहले तो उन की ताक़त कम करने के लिये उन पर भारी-भारी टैक्स लगाये, सख़्त काम लिये हर क़िस्म की मेहनत और बेगार उन से ही ली और खेतों में सख़्त से सख़्त काम करा कर उन का जीना दूभर कर दिया लेकिन इस तदबीर से भी उन्हें इतमीनान न हुआ, और उस ने फ़ैसला कर लिया कि बनी इस्राईल की

ताक़त कम करने के लिये उन की संख्या घटाई जाये। उस ज़ालिम ने उन औरतों को जो बनी इस्राईल के लोगों में दाई का काम करती थीं, हुक्म दिया कि "जब किसी घराने में कोई लड़का पैदा हो तो वह उसी वक़्त उस का गला घोंट दें और लड़की हो तो रहने दें"।

उस का ख़याल था कि सेवा के लिये लड़कियाँ काफ़ी हैं और इस तरह कुछ दिनों में बनी इस्राईल की नस्ल ही ख़त्म हो जायेगी।

इस से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि उस वक़्त में बसने वाली उन दो क़ौमों का क्या हाल था एक तरफ़ थोड़े से मुसलमान थे बनी इस्राईल जिन का ईमान और इस्लाम अगरचे बहुत कमज़ोर हो चुका था और उन में बहुत सी ख़राबियाँ भी पैदा हो गई थीं, लेकिन वह किसी तरह इस के लिये तयार न थे कि अपने आप को इसी रंग में रंग लें जो मिस्रियों को पसन्द था। दूसरी तरफ़ देवताओं को पूजने वाली एक मुशरिक क़ौम थी जिस ने फ़ैसला कर लिया था कि मुल्क में बस एक ही क़ौम को जीने का हक़ है और दूसरी क़ौम के लोगों को जिस तरह भी हो ख़त्म ही कर डालना चाहिये। इस नापाक मक़सद के लिये उन्होंने हर क़िस्म की तदबीरों पर अमल शुरू कर दिया था। सताना, मारना पीटना, ज़लील करना, लूटना खसोटना तो था ही, अब सिरे से उन की नस्ल

को ही मिटा डालने का फ़ैसला कर लिया लेकिन ऐसे नाज़ुक हालात में भी एक गिरती हुई क़ौम को अल्लाह तआला ने सरबुलंद फ़रमाया, ज़ुल्म करने वालों का ज़ोर तोड़ा, जो गिरे हुये थे उन्हें उठाया, और घमंड से जिन की गर्दनें अकड़ी हुई थीं उन्हें हार का सामना करना पड़ा।

यह सब बातें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के हालात में आप के सामने आयेंगी, आप को विस्तार के साथ मालूम होगा कि कोई क़ौम ज़लील व ख़्वार क्यों होती है, और क्या बातें उस को ज़िल्लत और मुसीबत से निकाल कर इस दुनिया में भी ऊँचे से ऊँचा मक़ाम दे सकती है। इस क़िस्से में आप को यह भी मालूम होगा कि अल्लाह तआला से बग़ावत करने का अंजाम क्या होता है और जब वक़्त आ जाता है तो बड़ी से बड़ी कुव्वत किस तरह पिस्सू और मच्छर की तरह मसल कर फेंक दी जाती है।

मूसा (अलै०) की पैदाइश और बादशाह के महल में परवरिश

मिस्र का बादशाह फ़िरऔन एक तरफ़ यह उपाय कर रहा था कि बनी इस्राईल के लड़को को पैदा होते ही मरवा डाले और इस तरह उस क़ौम की नस्ल ही ख़त्म कर दे। दूसरी तरफ़ अल्लाह का करना ऐसा

हुआ कि ठीक उसी ज़माने में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुये। वही मूसा जिन के हाथों आगे चल कर फ़िरऔनियत का ख़ात्मा होना था और जिन की तर्बियत से बनी इस्राईल जैसी कमज़ोर क़ौम को दुनिया की इमामत मिलने वाली थी। मूसा अलैहिस्सलाम उसी शह्र में पैदा हुये जहाँ फ़िरऔन हुकूमत करता था और जहाँ बनी इस्राईल के बच्चों को मार डालने का हुक्म चल रहा था। हो सकता है कि आप की वालिदा ने आप की पैदाइश के वक़्त किसी दाई को बुलाया ही न हो, या कोई और सूरत हुई हो, बहरहाल मूसा अलैहिस्सलाम पैदा हुये। आप के पैदा होने से आप की माँ को यह डर पैदा हुआ कि कहीं हुकूमत के आदमी आकर बच्चे को कोई नुक़सान न पहुंचायें आप इसी परेशानी में थीं कि अल्लाह तआला ने आप पर वह्‍ी भेजी कि "नहीं, डरने की कोई बात नहीं, तुम बच्चे को दूध पिलाओ और अगर किसी बात का डर हो तो बच्चे को बेखटके दरिया में बहा देना हम उसे लौटा कर तुम्हारे ही पास पहुंचा देंगे। और उसे तो हम अपना रसूल बनाने वाले हैं।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की माँ को इस वह्‍ी से कुछ तसल्ली हुई। आप ने अल्लाह पर भरोसा कर के बच्चे को एक संदूक़ में लिटाया और संदूक़ को दरिया में बहा दिया। साथ ही साथ मूसा अलैहिस्सलाम की

बहन से कहा कि "बेटी ज़रा तुम किनारे-किनारे चलती रहो और देखो कि यह संदूक़ कहाँ जाता है" बहन दूर से संदूक़ को देखती रहीं और उस के साथ-साथ चलती रहीं। संदूक़ बहते-बहते फ़िरऔन के महल के पास पहुंच गया फ़िरऔन के लोगों ने संदूक़ को दरिया से निकाला, खोल कर देखा तो उस में एक छोटा सा बच्चा हाथ पाँव मार रहा था उन की समझ में कुछ न आया कि बच्चा किस का है वह बच्चा को उठा कर महल के अन्दर ले गये, फ़िरऔन ने चाहा कि उसे क़त्ल कर दिया जाये। उसे शक हो गया होगा कि हो न हो यह किसी इस्राईली का बच्चा है लेकिन जब बच्चे को फ़िरऔन की बीवी ने देखा तो उसे बच्चा बहुत अच्छा लगा, और शायद उस के कोई औलाद न थी इस लिये उस का दिल चाहा कि वही उस बच्चे को पाल ले उस ने फ़िरऔन से कहा "कि देखो यह बच्चा तो मेरी और तुम्हारी आँखों की ठंडक मालूम होता है इसे क़त्ल करने की ज़रूरत नहीं, हो सकता है कि इस से हमें कोई नफ़ा पहुंचे या हम इसे अपना बेटा बना लें"।

उन को क्या मालूम था कि वह किस की परवरिश का इरादा कर रहे हैं, ग़ौर करने की बात है कि एक तरफ़ तो फ़िरऔन को देवता और ख़ुदा बनने का दावा था, दूसरी तरफ़ उस की बेख़बरी का यह हाल

था कि वह अपने ही महल में उस शख़्स को परवरिश करने के लिये तयार हो गया था जो आगे चल कर उस की नस्ली ख़ुदाई का भांडा फोड़ने वाला था और जिस के हाथों मिस्र में फ़िरऔनियत का ख़ात्मा (अंत) होने वाला था।

अल्लाह तआला के इन्तिज़ामात भी अजीब हैं उस की हिकमत को कौन समझ सकता है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जिस हुकूमत की जड़ें हिलाना थीं और जिस ख़ुदाई ठाट को उन्हें मिटाना था उस के बारे में जिस क़िस्म की अनदरूनी मालूमात की ज़रूरत थी वह आप को कैसे हासिल होतीं? अगर आप की परवरिश का इन्तिज़ाम बादशाही महलों में न होता। बनी इस्राईल मिस्र में बहुत ही कम हैसियत के लोग समझे जाते थे इस लिये उन के किसी लड़के को यह मौक़ा कहाँ मिलता कि वह मुल्क की सियासत और बादशाह के अनदरूनी हाल से बाख़बर हो सकता?।

उधर फ़िरऔन और उस की बीवी ने यह तय किया कि वह बच्चे को पाल लें। उधर जब मूसा की माँ ने यह सुना कि बच्चे को फ़िरऔन के लोग उठा ले गये तो उन के दिल का चैन जाता रहा अगर अल्लाह तआला अपने ख़ास करम से उन के दिल को न थामता तो हो सकता था कि वह मामता की मारी सब कुछ भूल जातीं और कह बैठतीं कि यह बच्चा

मेरा है अल्लाह ने उन के दिल को सब्र अता फ़रमाया और उन्हों ने बड़े ज़ब्त से काम लिया मगर फिर भी उन्हों ने अपनी लड़की को भेजा कि ज़रा पता तो चलाये कि फ़िरऔन के लोगों ने बच्चे का क्या किया।

अब अल्लाह तआला के इन्तिज़ामात देखिये जब यह तय हो गया कि बच्चे को पालना है तो उस के लिये दूध पिलाने वाली की तलाश हुई बहुत सी औरतें आई, मगर मूसा (अलै॰) ने किसी का दूध मुंह में न लिया यह बात मूसा अलैहिस्सलाम की बहन को भी मालूम हुई उन्हों ने इस मौके से फ़ायदा उठाया, बोलीं "क्या मैं तुम्हारे लिये कोई ऐसा घराना तलाश करूँ जो इस बच्चे की परवरिश बहुत ही मुहब्बत और अच्छी तरह से कर सके?"

फ़िरऔन के लोग तो परेशान थे ही तुरन्त राज़ी हो गये। मूसा अलैहिस्सलाम की माँ दूध पिलाने के लिये बुलाई गई। और लीजिये मूसा अलैहिस्सलाम लौट कर फिर अपनी माँ की गोद में आ गये। उन की आँखें ठंडी हुई, ग़म दूर हुआ, और उन्हें मालूम हो गया कि अल्लाह का वादा कैसा सच्चा था।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम शाही महलों में परवरिश पाते रहे। शहज़ादों की तरह उन की तालीम व तर्बियत का इन्तिज़ाम हुआ और वह बढ़ कर जवान हो गये लेकिन उन पर शाही महल की ख़राब आदतों

का कोई असर न हुआ उन में वह बुराईयाँ पैदा न हो सकीं जो आमतौर पर शहज़ादों में पैदा हो जाती हैं।

यह अल्लाह तआला का ख़ास करम था हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को आगे चल कर रसूल बनना था। इसी लिये आप को जो ज़ेहनी और दिमाग़ी क़ाबलियत बख़्शी गई थी, और जितना अच्छा और ऊँचा चरित्र अता हुआ था उस ने बादशाही महल की तालीम से सिर्फ़ अच्छा ही असर लिया और उन बुराईयों से बिल्कुल बचे रहे जो इस माहौल में पलने वालों में आमतौर पर पैदा हो जाया करती हैं।

क़िब्ती का क़त्ल

जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जवान हो गये तो एक दिन ऐसा हुआ कि जिस वक़्त लोग सो सुला रहे थे, आप शह्र में किसी काम से गये एक जगह देखा कि दो आदमी लड़ रहे हैं आप पास गये तो मालूम हुआ कि एक तो उन की अपनी क़ौम का है और दूसरा फ़िरऔन की क़ौम का, इस्राईली ने जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम का आदमी था आप को देख कर फ़रयाद की, आमतौर पर फ़िरऔन की क़ौम वाले क़िब्ती इस्राईलियों को सताया ही करते थे, उस शख़्स के फ़रयाद करने से आप को यही ख़याल हुआ कि उस पर ज़ुल्म हो रहा है आप ने क़िब्ती को ज़ालिम समझ कर उस को एक मुक्का मारा। होने

वाली बात, मुक्का कुछ ऐसा लगा कि क़िब्ती वहीं ढेर हो गया। मूसा अलैहिस्सलाम उसे जान से मारना नहीं चाहते थे यह देख कर कि वह मर गया आप को बहुत अफ़सोस हुआ और जब हालात मालूम किये तो यह जान कर और भी अफ़सोस हुआ कि कुसूर क़िब्ती का नहीं था, बल्कि ज़्यादती इस्राईली ही की तरफ़ से हुई थी, आप ने बहुत तकलीफ़ महसूस करते हुये कहा कि "मुझ से बिला वजेह एक शैतानी काम हो गया" आप ने तुरन्त अल्लाह तआला से तोबा की और अपनी उस ग़लती की माफ़ी माँगी और वादा फ़रमाया कि "ऐ रब! अब मैं कभी किसी मुजरिम की मदद नहीं करूंगा तूने मुझ पर बड़ा फ़ज़्ल किया कि मुझे माफ़ कर दिया।"

अल्लाह तआला दिलों का हाल जानने वाला है उसे मालूम था कि मूसा अलैहिस्सलाम ने जान बूझ कर क़त्ल नहीं किया है, बल्कि इत्तिफ़ाक़ से एक ग़लतफ़हमी की वजह से ऐसा हो गया, इस लिये अल्लाह तआला ने तोबा कुबूल फ़रमा ली और उन की ग़लती को माफ़ कर दिया।

दूसरे दिन फिर जब आप शह्र गये तो देखा वही इस्राईली किसी और से झगड़ रहा है उस ने फिर आप को मदद के लिये पुकारा आप ने कहा "तुम बड़े झगड़ालू हो, हर एक से झगड़ते हो" अब जो हज़रत

मूसा अलैहिस्सलाम ने झगड़े की वजह मालूम की तो पता चला कि आज इस्राईली पर ही ज़ुल्म हो रहा था और ज़्यादती क़िब्ती की थी, यह जान कर मूसा अलैहिस्सलाम ने चाहा कि मज़लूम की मदद के लिये हाथ बढ़ायें, इस्राईली समझा कि शायद मुझे ही मारना चाहते हैं, घबराहट में बोल उठा "ऐ मूसा क्या तुम मुझे भी क़त्ल करना चाहते हो जैसे कल तुम ने एक आदमी को मार डाला था? मालूम होता है कि तुम ने फ़ैसला कर लिया है कि मुल्क में सब से बड़े फ़सादी तुम ही बनोगे, और कोई सुधार करने का तुम्हारा इरादा है ही नहीं" इस के इतना कहते ही क़िब्ती को मालूम हो गया कि कल जिस आदमी का क़त्ल हुआ था वह किस के हाथ से हुआ था बात थोड़ी ही देर में फैल गई।

फ़िरऔन और उस के दरबारियों को उस वक़्त तक मूसा अलैहिस्सलाम में बहुत सी बातें ऐसी नज़र आ गई होंगी कि वह उन्हें पसंद नहीं करते होंगे। फ़िरऔन को नाख़ुश करने के लिये तो हज़रत मूसा (अलै०) की यही एक "हरकत" बहुत काफ़ी थी कि उन्हों ने शाही क़ौम के एक आदमी के मुक़ाबले में एक इस्राईली, ग़ुलाम क़ौम के आदमी की मदद की। मालूम होता है इसी वजह से फ़िरऔन के दरबारियों ने तैय कर लिया कि बस इसी वाक़िआ की बिना पर हज़रत

मूसा (अलै०) का क़िस्सा पाक कर दिया जाये। लेकिन जहाँ बुरे होते हैं वहाँ कोई न कोई भला भी निकल ही आता है मालूम होता है कि उन्हीं दरबारियों में कोई ऐसा नेक आदमी भी था जो मूसा अलैहिस्सलाम की ख़ूबियों को पहचानता था और शायद उसे यह भी मालूम हो गया था कि इस क़त्ल की असल वजह क्या थी इसी लिये वह भागा-भागा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पास आया और ख़बर दी कि "सलतनत के अराकीन (सदस्य) मश्वरा कर रहे हैं कि तुम्हें क़त्ल कर दिया जाये इस लिये मेरी राय यह है कि तुम शह्र छोड़ कर कहीं चले जाओ, मैं तुम्हारा भला चाहता हूँ, इस लिये ऐसा कह रहा हूँ।"

मूसा अलैहिस्सलाम यह सुन कर शह्र से चल दिये आप को डर था कि कहीं कोई पीछे से आकर पकड़ न ले आप ने अल्लाह से दुआ की-

"ऐ मालिक! इन ज़ालिमों की बुराई से मुझे बचाये रखियो।"

सच है मोमिन का सहारा हर हाल में अल्लाह तआला की ज़ात पर ही होता है।

मदयन की ज़िन्दगी

जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मिस्र से निकले तो आप ने "मदयन" की आबादी का रूख़ किया। यह

जगह बहीर-ए-कुलज़ुम के पूरबी किनारे पर थी और फ़िरऔन की हुकूमत से बाहर, यहाँ बसने वाले क़बीले हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नस्ल से थे और इस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से क़रीबी रिश्ता रखते थे, शायद इसी लिये आप ने इस जगह को पसन्द फ़रमाया और चल खड़े हुये, उस सफ़र में मूसा अलैहिस्सलाम बिल्कुल अकेले थे न कोई साथी न मदद्गार, फिर हर वक़्त यह डर कि कहीं दुश्मन पीछे से आ कर घेर न लें। लेकिन हज़रत मूसा का दिल मुतमईन (संतुष्ट) था और कह रहा था "मेरा रब मुझे सीधे रास्ते पर ही ले जायेगा"।

चलते-चलते कुछ दिनों के बाद आप मदयन की बस्ती के क़रीब पहुंचे, यहाँ देखा एक कुंए पर बहुत से लोग अपने अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं और पास ही दो लड़कियाँ अपने जानवरों को रोके हुये अलग खड़ी हैं मूसा अलैहिस्सलाम ने उन से पूछा, "क्यों? तुम इस तरह अलग क्यों खड़ी हो?"लड़कियों ने जवाब दिया "जब तक यह सब चरवाहे अपने जानवरों को पानी न पिला लें हम कैसे पिला सकते हैं? हम इन के मुक़ाबले में कमज़ोर हैं और हमारे वालिद (पिता) बहुत बूढ़े हैं"।

मूसा अलैहिस्सलाम यह न देख सके कि ताक़तवर इस तरह कमज़ोर का हक़ मारे, वह आगे बढ़े और

लड़कियों के जानवरों को पानी पिला दिया पानी पिला कर वहीं छांव में किसी जगह बैठ गये, और अपने रब की तरफ़ ध्यान लगा कर कहने लगे "ऐ मेरे रब उस भलाई का मोहताज हूँ जो तूने मेरी तरफ़ भेजी है"।

यूँ देखने में बात तो बहुत छोटी सी है, हज़रत मूसा (अलै०) ने कमज़ोर लड़कियों की मदद की, उन के जानवरों को पानी पिला दिया, चलिये एक नेकी का काम था कर दिया, लेकिन ज़रा ग़ौर कीजिये तो समझ में आ जायेगा कि अल्लाह तआला ने उस छोटे से वाक़िए का ज़िक्र फ़रमा कर एक बहुत बड़ी हक़ीक़त इन्सान पर ज़ाहिर फ़रमाई। पहली बात तो यह सामने आती है कि जो नेमतें अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमाई हैं जैसे हवा, पानी, सूरज की रोशनी, बारिश, दरिया, पहाड़, ख़ुद उगने वाली घास और जंगल और ज़मीन के ख़ज़ाने वग़ैरा, जिन के पैदा करने में इन्सान को कोई मेहनत नहीं करना पड़ती उन पर किसी ख़ास शख़्स का क़ब्ज़ा नहीं होना चाहिये ऐसी चीज़ों को बाँटने के लिये "जिस की लाठी उस की भैंस" वाला उसूल ठीक नहीं, बल्कि ऐसी तमाम चीज़ों को आम इन्सानों की ज़रूरियात के लिहाज़ से बाँटा जाना चाहिये, फ़साद की शुरूआत यहीं से होती है कि ताक़त के बल पर कुछ इन्सान अल्लाह की नेमतों पर

क़ब्ज़ा जमा लें और दूसरे लोगों को जिन को उस की ज़रूरत है सिर्फ़ इस लिये महरूम कर दें कि वह ताक़त में कम हैं, अल्लाह का लाया हुआ ज़िन्दगी का क़ानून इन्सानों को इस लानत से छुटकारा दिलाता है मूसा अलैहिस्सलाम को आगे चल कर यही क़ानून क़ायम करना था इस लिये वह उसे बरदाश्त ही नहीं कर सकते थे कि ताक़तवर कमज़ोरों का हक़ छीनें और वह देखा करें।

लड़कियाँ लौट कर अपने बाप के पास आई और उस वाक़िआ का ज़िक्र किया बाप का दिल चाहा कि ऐसे भले और हमदर्द से मिलना चाहिये उन्हों ने एक लड़की को भेजा कि जाओ उस नवजवान को मेरे पास बुला लाओ, लड़की शरमाती हुई हज़रत मूसा (अलै०) के पास आई और बोली "मेरे वालिद आप को बुलाते हैं ताकि वह इस एहसान का कुछ बदला दे सकें जो आप ने हमारे जानवरों को पानी पिला कर हमारे ऊपर किया है"।

मूसा अलैहिस्सलाम लड़की के साथ हो लिये जा कर उन के वालिद (पिता) से मिले और कुल आपबीती सुना डाली उन्हों ने सुन कर कहा "अब डरने की कोई बात नहीं, इतमीनान (संतोष) रखो उन ज़ालिमों के पंजे से तुम छुटकारा (मुक्ति) पा गये"।

जब मूसा अलैहिस्सलाम वहाँ ठहर गये तो एक

दिन एक लड़की ने बाप के सामने एक राय रखी कि "क्यों न इस नवजवान को आप अपने यहाँ नोकर रख लें नोकर तो वही अच्छा होता है जो ताक़तवर भी हो और ईमानदार भी"। लड़कियों के पिता को यह बात पसन्द आई और उन्हों ने सब मुआमलों पर सोच विचार कर के एक अच्छी सूरत निकाली। हज़रत मूसा से बोले "मेरा जी चाहता है कि मैं अपनी दोनों बेटियों में से एक का निकाह तुम से कर दूँ, शर्त यह है कि तुम आठ साल तक मेरी नोकरी करो, और दस पूरे कर दो तो यह तुम्हारी तरफ़ से एक एहसान होगा, मैं नहीं चाहता कि तुम पर ज़्यादा बोझ डालूँ, अल्लाह ने चाहा तो इस मुद्दत में तुम मुझे एक भला आदमी ही पाओगे"। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उन बुज़ुर्ग की बात मान ली, बोले "मेरे और आप के बीच यह मुआमला तैय है इस में कोई हर्ज नहीं होगा कि मैं इन दोनों मुद्दतों में से जो मुद्दत भी चाहूँगा पूरी कर दूँगा और हम यह जो कुछ तैय कर रहे हैं उस पर अल्लाह को गवाह बनाते हैं, उसी पर हमारा भरोसा है"।

कहते हैं कि यह बुज़ुर्ग जिन से हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का मुआमला हुआ हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम हैं, देखिये अल्लाह तआला के इन्तिज़ामात उस वक़्त तक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम

को फ़िरऔन के महलों में परवरिश कराई और सियासत और मुमलकत के तमाम राज़ों से बाख़बर फ़रमाया, अब आठ या दस साल तक के लिये एक पैग़म्बर की संगति अता फ़रमाई असल में यह मुद्दत सिर्फ़ ऊँट और बकरियाँ चराने ही के लिये नहीं थी, बल्कि यह भी उसी बड़े काम की तयारी का ज़माना था जिस के लिये अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को चुना और जो आगे चल कर आप को पूरा करना था।

नबी बनाया जाना

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने नौकरी की मुद्दत पूरी कर ली शादी भी हो गई। वतन से निकले एक मुद्दत हो गई थी, घर वाले और ख़ासतौर पर बड़े भाई हज़रत हारून अलैहिस्सलाम की याद सता रही थी आप ने इरादा किया कि अब वतन जायें अपने सुसर से इजाज़त माँगी और अपनी बीवी को साथ लेकर मिस्र की तरफ़ चल दिये रास्ते में एक अजीब वाक़िआ पेश आया-

अंधेरी रात थी, सर्दी भी ज़्यादा पड़ रही थी, रास्ते का कोई सही निशान न था कि किधर जायें, अचानक आप के सामने एक पहाड़ पर आग दिखाई दी आप ने अपने घर वालों से कहा "तुम यहीं ठहरो,

मैं जाता हूँ, थोड़ी सी आग ले आऊँ तुम ताप भी लेना और अगर आग के पास कोई मिल गया तो शायद रास्ते का भी कुछ पता चल जाये"।

हज़रत मूसा (अलै०) आग लेने की कोशिश में क़दम बढ़ा रहे थे, उन्हें अल्लाह के दीन का कुछ पता नहीं था कि आग लेने जा रहे हैं मगर पैग़म्बरी मिलने वाली है आग सामने नज़र आ रही थी अब जो उस के कुछ क़रीब आये तो किसी ने आप का नाम ले कर पुकारा "ऐ मूसा (अलै०)! आप चौंक पड़े इस अनजान जगह यह जानने वाला कौन निकल आया जो नाम लेकर पुकार रहा है? अभी यह आप सोच ही रहे थे कि उसी आवाज़ ने फिर कहा-

"मैं ही तुम्हारा रब हूँ जूते उतार डालो इस वक़्त तुम तुवा की मुक़द्दस (पवित्र) वादी में खड़े हो, और देखो मैं ने तुम्हें पैग़म्बरी के लिये चुन लिया है अब जो कुछ कहा जा रहा है उसे ध्यान से सुनो-

मैं ही अल्लाह हूँ।

मेरे सिवा होई इबादत के लायक़ नहीं।

इस लिये सिर्फ़ मेरी इबादत (पूजा) करो।

और मेरी याद के लिये नमाज़ क़ायम करो।

और यक़ीन रखो कि क़यामत का दिन ज़रूर आयेगा।

लेकिन मैं ने उस पर पर्दा डाल रखा है।

ताकि यह अंदाज़ा हो जाये कि कौन कैसे काम करता है।

और फिर हर शख़्स को उस के कर्मों के मुताबिक़ बदला दिया जा सके।

और देखो कहीं ऐसा न हो कि जो लोग उस दिन के आने का यक़ीन नहीं रखते हैं, बल्कि वह अपने ख़्वाहिशात के ही बन्दे हैं, वह तुम को मेरी उपासना और बनदगी से रोक दें, अगर तुम ने ऐसा किया तो तुम बरबाद हो जाओगे।

(सूरः ताहा)

मूसा अलैहिस्सलाम ने उस आवाज़ को सुना समझ गये कि उन को क्या इज़्ज़त बख़्शी जा रही है तमाम इन्सानों में उन का दर्जा (पद) कितना बुलंद किया जा रहा है और साथ ही साथ वह क्या ज़िम्मेदारी है जो उन पर डाली जा रही है हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की ज़ुबान से कुछ न निकला, ख़ामोश खड़े सुन रहे थे।

और अगर उस के बाद आप से एक सवाल न कर लिया गया होता तो शायद अभी आप उसी तरह ख़ामोश खड़े रहते।

अच्छा इस से पहले कि आप अल्लाह तआला के सवाल और मूसा अलैहिस्सलाम के जवाब को पढ़ें, आईये उस वह्ी पर ग़ौर कर लें और उस पैग़ाम

(संदेश) को समझ लें जिस को पहुंचाने के लिये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को चुना गया।

सब से पहले इस बात का परिचय कराया गया कि यह आवाज़ कैसी है और कहाँ से आ रही है और यह कौन सी जगह है जहाँ मूसा अलैहिस्सलाम खड़े हैं, कुरआन करीम में एक दूसरी जगह पर इसी बात का ज़िक्र इन शब्दों में भी मिलता है-

"जब आप आग के क़रीब पहुंचे तो आवाज़ आई कि बरकत है उस पर जो आग में है और उस माहौल पर जिस में यह सब कुछ हो रहा है अल्लाह की ज़ात हर बुराई से पाक है जो दोनों जहान का रब है। ऐ मूसा वह तो मैं हूँ— अल्लाह ज़बरदस्त और हिकमत वाला।"

इस परिचय के बाद ही इस बात में वज़न पैदा होता है जो आगे कही जा रही है।

मूसा अलैहिस्सलाम को एक काम सौंपा जा रहा है उन से आज्ञापालन करने की माँग की जा रही है इन सब बातों का कोई अर्थ ही नहीं है अगर सुनने वाला हुक्म देने वाले को पहचानता ही न हो।

पहचानने की बात आ गई तो एक और बात पर ग़ौर करते चलिये—ज़मीन, आसमान, सूरज, चाँद, हवा, बादल, ज़मीन पर उगने वाले पौदे (पदार्थ) चरिन्द,

परिन्द, कीड़े मकोड़े, ख़ुद इन्सान की अपनी ज़ात उस के जिस्म की बनावट, उस के ज़िन्दा रहने के कारण उस की ख़ुराक का सामान, पानी, हवा, यानी दुनिया की हर छोटी बड़ी चीज़ इस बात की गवाही दे रही है कि

यह सब कुछ आप से आप नहीं बना है इन का एक पैदा करने वाला है फिर इस पेरी दुनिया का इन्तिज़ाम जिस ख़ूबी से चल रहा है और दुनिया की छोटी से छोटी चीज़ भी जिस तरह उसूलों में जकड़ी हुई है उस को देख कर हर देखने वाला यह मानने पर मजबूर है कि इस दुनिया को चलाने वाला और इन उसूलों का बनाने वाला सब से बड़ा इन्तिज़ाम करने वाला और हिकमत वाला है। दुनिया के पैदा करने वाले और उस के मालिक को जानने और पहचानने का यह सामान हर इन्सान के चारों तरफ़ इतना अधिक फैला हुआ है कि वह बग़ैर किसी शिक्षा और हिदायत के भी मजबूर है कि उस आक़ा और मालिक का कुछ न कुछ ख़याल उस के ज़ेहन में आ ही जाये। सोचने की बात है कि किसी पर हमेशा इनआम व इकराम की बारिश हो रही हो और वह यह समझ ले कि यह सब बग़ैर किसी मुनइम (इनआम देने वाला) के हो रहा है या किसी की परवरिश का बनदोबस्त ऐसे ऐसे तरीक़ों पर हो रहा हो कि वह

जितना सोचे उतना ही उस का तअज्जुब बढ़ता चला जाये, और फिर वह यह फ़ैसला कर ले कि यह सब कुछ बग़ैर किसी पालने वाले के हो रहा है। वह हर चीज़ को एक उसूल का पाबन्द पाये, हर इन्तिज़ाम को एक लगे बंधे ज़ाबते पर होता हुआ देखे और फिर यह मान ले कि यह सब कुछ बिला किसी हाकिम और बग़ैर किसी इन्तिज़ाम करने वाले के यूँ ही आप से आप हो रहा है यह बात इन्सान की फ़ितरत के ख़िलाफ़ है और यही वजह है कि इन्सान ने हर ज़माने में इस हक़ीक़त को जाना और पहचाना है यह बात दूसरी है कि इन्सान अपनी किसी ख़्वाहिश या अपने किसी जज़्बे से मजबूर हो जाये और फिर सिर्फ़ ज़िद की वजह से इन्कार कर बैठे अब तक इन्सान के लिये ख़ुदा की ज़ात के सही परिचय में जो चीज़ रूकावट बनती रही वह असल में इन्सान की बेजा ख़्वाहिशात और ग़लत जज़्बात ही हैं, जब वह यह देखता है कि ख़ुदा के मान लेने के बाद उसे यह करना होगा, तो फिर वह ख़ुदा के मानने की ऐसी सूरतें अपनाता है कि एक तरफ़ वह ख़ुदा को भी मानता रहे और दूसरी तरफ़ उस की ख़्वाहिशात और जज़्बात भी पूरे होते रहें, या फिर वह सिरे से ख़ुदा का ही इन्कार कर देता है।

पहली सूरत में ग़लत क़िस्म का मज़हब (धर्म)

पैदा होता है और दूसरी सूरत में इलहाद (नास्तिकता) या माद्दा परस्ती।

ख़ुदा का यह परिचय जिस के लिये अनगिन्त असबाब हर इन्सान की अपनी-अपनी अक्ल और समझ के मुताबिक़ इस संसार में चारों ओर मौजूद हैं इन्सान को ख़ुदा का एक मुख़्तसर ख़याल तो दे सकता है मगर इतना ही काफ़ी नहीं। इस की ज़ात और सिफ़ात का सही इल्म इसे हासिल नहीं हो सकता अल्लाह तआला अपने बन्दों पर बहुत ही मेहरबान है उस ने उस की आसानी के लिये सैकड़ों इन्तिज़ामात किये हैं उस ने उस की इस मुश्किल को भी आसान फ़रमाया है।

उस ने इन्सानों में से ही ऐसे इन्सान चुन लिये जिन को उस ने अपना यही परिचय अता किया और हिदायत की रोशनी से नवाज़ा। यही उस के रसूल हैं और उन के ज़रिये से इन्सान अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात की सही जानकारी हासिल कर सकता है और उस की रज़ा और नाराज़ी की बातों को जान सकता है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को सब से पहले उसी परिचय से नवाज़ा गया और फिर उन्हें यह ख़ुशख़बरी सुनाई गई कि हम ने तुम्हें एक ख़ास काम के लिये चुन लिया है अब इस ख़िदमत के लिये कमर बाँध लो

और इस सिलसिले की ज़रूरी हिदायात सुनो।

कितनी अहम है वह हिदायत जो सब से पहले दी गई।

आगे चल कर आप को विस्तार के साथ मालूम होगा कि वह क्या ख़िदमत (सेवा) थी जिस के लिये मूसा (अलै०) को चुना गया था। एक तरफ़

"फ़िरऔन और उस की सरकशी थी जिस ने इन्सानों को इन्सान का बन्दा बना लिया था, उस के वज़ीर हामान का फैलाया हुआ ग़लत मज़हबिय्यत का जाल था, जिस में इन्सान का शरीर ही नहीं बल्कि रूह तक जकड़ी हुई थी और

"क़ौमी सरमायादारी का एक बोझ था जिस के नीचे दबी हुई इन्सानियत बिलबिला रही थी, और उस लानत का नुमाइन्दा क़ारून लोगों की आरज़ुओं का मरकज़ बना हुआ था दूसरी तरफ़-

एक मज़लूम क़ौम थी, बिगड़ी हुई मुसलमान क़ौम जो अपने हमवतनों के हाथों ज़लील थी, कमज़ोर थी और ज़िन्दगी से उकताई हुई, जिस को ग़ुलाम बना लेने और जिस के ख़ून का आख़िरी क़तरा तक चूस लेने पर भी मुख़ालिफ़ क़ौम को तसल्ली नहीं हो रही थी बल्कि उस ने उस क़ौम की नस्ल ही ख़त्म कर देने का मंसूबा (योजना) तयार कर लिया था।

मूसा अलैहिस्सलाम को एक तरफ़ फ़िरऔन, हामान और क़ारून से निमटना था उन को और उन की क़ौम को अल्लाह तआला के दीन की दावत पहुंचाना थी, दूसरी तरफ़ उस कमज़ोर क़ौम का सुधार करना था उस की बुराईयों को दूर करना था और उसे भी उस का भूला हुआ सबक़ याद दिलाना था सोचिये कितना सख़्त काम सौंपा जा रहा था मगर यह कोई नई बात न थी यही तो काम हैं जिन को अंजाम देने के लिये हमेशा रसूल आते रहे हैं और जिन को पूरा करने के लिये रसूलों के मानने वालों ने हमेशा जान की बाज़ी लगाई है।

इस अहम काम के लिये सब से पहली हिदायत सोचिये कितनी अहम हिदायत होगी, अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنَا فَاعْبُدْنِیْ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِی.

लाइलाहा इल्ला अना फ़ाबुदुनी व अक़िमिस्सला-त लिज़िकरी।

"अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं बड़ाई उसी के लिये है। ताक़त और ज़ोर में कोई उस से बढ़ कर नहीं, ज़रूरतें पूरी करना, पनाह देना, और सुकून बख़्शना उसी का काम है सारी चीज़ें उसी के क़ब्ज़े में हैं"।

"इस लिये वही और सिर्फ़ वही इस का हक़दार है कि उस की बन्दगी की जाये, हुक्म देना हाकिम का हक़ है उसी का आज्ञापालन करना सही है"।

पूरी ज़िन्दगी में उसी की उपासना पर जमने और हर मौक़े पर उस के हुक्मों पर चलने के लिये ज़रूरी है कि इन्सान हर वक़्त याद रखे कि उस का असली मालिक और आक़ा कौन है वह किस का बन्दा है और किस की बन्दगी और उपासना उस के लिये मुनासिब है यह सब बातें याद रखने के लिये नमाज़ क़ायम करना ज़रूरी है जिस ने नमाज़ की हिफ़ाज़त नहीं की वह अल्लाह की बन्दगी के रास्ते पर हरगिज़ नहीं जम सकता, नमाज़ सारी इबादतों की बुनियाद है और कोई शख़्स अल्लाह को अपना माबूद मानता हो और उस की बन्दगी का इक़रार करता हो, लेकिन नमाज़ की हिफ़ाज़त न करता हो तो समझ लीजिये कि उस के इक़रार में कुछ खोट है"।

यह है उस शुरू की हिदायत का ख़ुलासा, यही हिदायत इन्सान के सुधार का सब से पहला इलाज है इस के बग़ैर इन्सान को इन्सान बनाना मुम्किन नहीं यही वह बुनियादी हिदायत है जिस से मुँह मोड़ कर इन्सान सिवाये ज़िल्लत और नामुरादी के कुछ नहीं पाता, इस दुनिया की कामियाबी के लिये भी यही नुस्ख़ा है और उस हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी के चैन

और आराम के लिये भी इसी की उपासना करनी होगी।

इस शुरू की वह्ी में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को इस ख़तरे से भी ख़बरदार किया जा रहा है कि देखो यह आख़िरत को भूल जाने वाले लोग तुम्हें तबाही की तरफ़ न ले जायें।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को दिये हुये इस ख़ुदाई संदेश को सामने रखिये इस में तमाम इन्सानों के लिये नसीहत और रहनुमाई का बहुत बड़ा सरमाया है।

मूसा अलैहिस्सलाम ख़ामोश खड़े अल्लाह तआला का संदेश सुन रहे थे कि इतने में उन से पूछा गया "मूसा यह तुम्हारे दाहने हाथ में क्या है?" हज़रत मूसा (अलै०) ने कहा

"यह मेरी लाठी है इस पर मैं टेक लगाता हूँ और अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ लेता हूँ और इस से मेरे और भी बहुत से काम निकलते हैं"।

फ़रमाया गया- "इसे ज़मीन पर डाल दो"

मूसा अलैहिस्सलाम ने ऐसा ही किया, क्या देखते हैं कि वह तो एक साँप है जो इधर उधर दौड़ रहा है, मूसा अलैहिस्सलाम यह देख कर बहुत घबराये पीठ फेर कर भागे ही थे कि आवाज़ आई, "मूसा! आगे बढ़ कर इसे पकड़ लो, डरो मत, तुम बिल्कुल महफ़ूज़

हो देखो हम उसे फिर वैसा ही किये देते हैं जैसी वह थी हमारे रसूल तो हमारे क़रीबी होते हैं डरा नहीं करते" मूसा अलैहिस्सलाम ने आज्ञापालन की और आगे बढ़ कर उसे पकड़ लिया अब साँप कहाँ था वही लाठी मूसा अलैहिस्सलाम के हाथ में थी इतने में फिर आवाज़ आई "अपने हाथ को ज़रा अपनी बग़ल में रखो यह बिल्कुल चमकता हुआ निकलेगा बग़ैर किसी ऐब के" यह दूसरी पहचान हुई इस बात की कि तुम सच मुच हमारे रसूल हो यह दोनों निशानियाँ तुम को तुम्हारे रब की तरफ़ से इस लिये दी जा रही हैं ताकि तुम जाकर फ़िरऔन, उस के सरदारों और उस की क़ौम को दिखाओ, और उन्हें हमारी नाफ़रमानी से रोको, यह लोग बड़े ही सरकश और नाफ़रमान हो गये हैं और अभी क्या है आगे चल कर हम तुम को अपनी कुदरत की बड़ी-बड़ी निशानियाँ दिखायेंगे"।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम नबी हो गये, इन्सानों में सब से ऊँचा दर्जा (पद) जो किसी को मिल सकता था वह मिल गया अल्लाह तआला से बातें करने की इज़्ज़त हासिल हुई और नुबूव्वत के सुबूत में दो चमतकार मिले मगर-

जिन के रूतबे हैं सिवा उन को सिवा मुश्किल है।

अब ज़रा उस ख़िदमत को भी तो सुनिये जिस पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को लगाया गया था

सच तो यह है कि दुनिया की ज़िन्दगी किसी तरह भी आराम व आसाइश की ज़िन्दगी नहीं है यह ज़िन्दगी तो ज़िम्मेदारियों को पूरा करने की मुहलत है डियूटी पूरी करने का वक़्त है, जिस का दर्जा जितना ऊँचा है उस को उतना ही बड़ा काम करना है चुनाचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के लिये हुक्म हुआ है कि "जाओ, फ़िरऔन के पास जाओ उस ने बहुत सिर उठाया है उस के दरबारी और उस की क़ौम सब के सब हद से गुज़र गये हैं वह बहुत ज़्यादा ज़ुल्म कर रहे हैं उन से कहो कि क्या तुम को अल्लाह का डर नहीं? और फ़िरऔन से कहो कि क्या तू चाहता है कि तेरी ज़िन्दगी एक पाक ज़िन्दगी हो जाये? और क्या मैं तुझे ज़िन्दगी का वह रास्ता बता दूँ जो तेरे आक़ा और मालिक को पसंद है? ताकि तू कुछ अपने बुरे अंजाम से डरे"।

हज़रत मूसा (अलै०) ने इस हुक्म को सुना, काँप उठे, कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी उन पर डाली जा रही थी, वही फ़िरऔन जो मिस्र देश का अकेला मालिक था, जिस की ताक़त का कोई ठिकाना नहीं था, जिस के आस पास उस के चालाक सरदार इकट्ठे थे जिस की सारी क़ौम उस के फंदे में फंसी थी, और उस के इशारों पर नाचती थी, ग़र्ज़ यह कि उस वक़्त इन्सानी ताक़त और हुकूमत की ऊँची से ऊँची सूरत हो

सकती थी वह फ़िरऔन को हासिल थी। उधर हज़रत मूसा (अलै०) अकेले जिस का कोई साथी नहीं, हुकूमत और दौलत तो बड़ी चीज़ है, जिस के पास कुछ जानवरों के अलावा ज़िन्दगी गुज़ारने का भी सामान नहीं, जो बहुत दिनों से उस मुल्क से बाहर रहा है जिसे मुल्क के बदले हुये हालात का पता नहीं, जो इतने दिनों से एक चरवाहे की ज़िन्दगी गुज़ार रहा है, जिसे मिस्र की ज़ुबान भी कुछ भूल सी गई है उस को हुक्म हो रहा है कि "जाओ फ़िरऔन के दरबार में हमारा संदेश पहुंचाओ, उसे सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करो, उसे बताओ कि "तू ख़ुदा नहीं, बन्दा है, और बन्दा ही बन कर रहने में तेरा भला है"।

लेकिन हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जानते हैं कि इस संसार का असली बादशाह कौन है उस की ताक़त कितनी है वह क्या कुछ कर सकता है फ़िरऔन और उस की सारी कुव्वत उस के मुक़ाबले में कोई हैसियत ही नहीं रखती, और जब ऐसा ज़बरदस्त हाकिम हुक्म दे रहा है, जब ऐसे ताक़तवर की मदद साथ है तो फिर डरने की क्या बात है, तुरन्त तयार हो जाते हैं, लेकिन दुआ करना मोमिन की शान है मदद के लिये अपने मालिक के आगे हाथ फैलाना उस की सब से बड़ी कुव्वत है। तुरन्त दुआ की-

"ऐ आक़ा! मेरे सीने को खोल दे, प्रचार के रास्ते

में मुश्किलों का मुक़ाबला करने की ताक़त दे, मेरे काम को आसान फ़रमा, मेरी ज़ुबान को इस क़ाबिल बना दे कि तेरे फ़रमान को इस तरह बयान कर सकूँ कि बात लोगों के दिलों में उतर जाये"।

मालिक मुझे डर है कि यह लोग मुझे झूटा समझेंगे और तू जानता है कि मुझ से एक ग़लती हो गई है उन का एक आदमी मेरे हाथों मारा गया है कहीं ऐसा न हो कि वह मुझे क़त्ल कर दें और में यह काम न कर पाऊँ।

ख़ुदाया मेरी मदद फ़रमा! मेरे घर वालों में से मेरे भाई हारून को मेरा वज़ीर बना दे, उन की वजह से मेरे अन्दर हिम्मत पैदा होगी वह मेरा हाथ बटायेंगे, मैं जो कुछ कहूँगा उस की तसदीक़ (पुष्टि) करेंगे और यूँ भी वह मुझ से बेहतर और अच्छी तक़रीर कर सकते हैं। फिर हम दोनों मिल कर इस काम को करेंगे, तेरी तौहीद का ज़्यादा से ज़्यादा प्रचार करेंगे और हमेशा तेरी उपासना में लगे रहेंगे।

इस संसार के मालिक का मक़सद पूरा करने के लिये आप कमर बांधें और उस के काम को पूरा करने के लिये आप उसी से मदद माँगें फिर देखें कि उस की रहमतें किस तरह आप पर साया करती हैं और संसार का ज़र्रा-ज़र्रा किस तरह आप का साथ देने के लिये तयार नज़र आता है।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ कुबूल हो गई, फ़रमाया गया, तुम्हारी दुआ कुबूल हो गई, हम तुम्हारे भाई को तुम्हारे बाज़ू की ताक़त बनायेंगे और तुम दोनों को कामियाबी देंगे तुम पर उन लोगों का कोई ज़ोर नहीं चलेगा तुम दोनों और वह तमाम लोग जो तुम्हारा साथ देंगे कामियाब रहेंगे"।

ज़िम्मेदारियाँ

बीवी रास्ता देख रही होंगी कि मूसा अलैहिस्सलाम आग लेकर कब लौटते हैं उन्हें क्या मालूम कि इतनी देर में हालात क्या से क्या हो गये, वही हज़रत मूसा जो अब तक बकरियाँ चराया करते थे, अब उन्हें पूरी इन्सानियत को सीधा रास्ता दिखाने की ज़िम्मेदारी सौंप दी गई। बहरहाल हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब "तूर" से वापस हुये तो उन्हों ने मिस्र की तरफ़ तेज़ी से क़दम बढ़ाये, पहले सिर्फ़ भाई और अज़ीज़ों से मिलने की ख़्वाहिश थी मगर अब तो एक ज़िम्मेदारी उन के सुपुर्द की जा चुकी थी और उस का पूरा करना बाक़ी ज़िन्दगी का मक़सद था अकेला मक़सद।

उधर अल्लाह तआला ने हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को भी नुबुव्वत अता फ़रमाई, मिस्र में दोनों भाई मिले दोनों अच्छी तरह जानते थे कि उन्हें मिल कर क्या काम करना था अब कुछ और हिदायत दी गई-

फ़रमाया गया- "तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ, हमारी निशानियाँ उसे दिखाओ और हमारा संदेश पहुंचाओ, फ़िरऔन ने बहुत ही सिर उठाया है, उरू से जो कुछ कहना नर्मी से कहना, हो सकता है कि बात उस की समझ में आ जाये और वह अपने बुरे अंजाम से डरे।

यह सुन कर दोनों ने कहा कि "ऐ हमारे मालिक! हमें यह डर है कि कहीं वह हमारी बातें सुन कर बरस न पड़े और ग़ुस्से से हद से आगे न बढ़ जाये"।

अल्लाह तआला ने उन्हें तसल्ली दी, फ़रमाया "नहीं डरो मत! मैं तुम दोनों के साथ हूँ मुझे सब ख़बर है और सब कुछ मेरी निगाह में है तुम जाओ और उस से कहो कि हम दोनों तेरे आक़ा और मालिक की तरफ़ से नुमाइंदा (तर्जुमान) बन कर आये हैं"।

हज़रत मूसा और हज़रत हारून (अलै०) की ज़ुबान से यह दावा कि "हम दोनों अल्लाह के रसूल हैं" इस बात के समझने के लिये काफ़ी है कि उन दोनों ने फ़िरऔन से जा कर क्या कहा होगा दोनों ने वह संदेश फ़िरऔन के सामने पेश किया होगा जो अल्लाह के रसूल पेश किया करते हैं और जिस के बारे में विसतार के साथ हिदायत अभी तूर पर मूसा अलैहिस्सलाम को दी जा चुकी थी लेकिन हज़रत मूसा

सिर्फ़ फ़िरऔन और उस की क़ौम की हिदायत ही के लिये नहीं भेजे गये थे बल्कि आप का काम यह भी था कि आप बनी इस्राईल का सुधार करें और उन में जो दीनी कमज़ोरी आ गई थी उसे दूर करें, बनी इस्राईल बहुत दिनों से फ़िरऔन की ग़ुलामी में थे और ज़ाहिर है कि ग़ुलाम क़ौमों का धर्म बराबर कमज़ोर होता चला जाता है और बहुत से दीनी फ़राइज़ उन से छूट जाते हैं।

बनी इस्राईल में कुर्बानी बहुत बड़ी इबादत थी लेकिन फ़िरऔन ने उन्हें इस इबादत से रोक दिया था मिस्र वाले भी दूसरे मुशिरकों की तरह गाय की पूजा करते थे इस लिये मिस्र में बनी इस्राईल को इस की इजाज़त नहीं थी कि वह गाय की कुर्बानी कर सकें। हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिमस्सलाम को जहाँ अल्लाह की तरफ़ से यह हिदायत मिली कि तुम अपने क़ौम को अक़ाइद की ख़राबी और बेअमली के अंधेरे से निकाल कर ईमान और इस्लाम की सही रोशनी में लाओ, वहीं उन को यह भी बताया गया कि फ़िरऔन को अल्लाह के दीन की दावत पहुंचाने के साथ साथ उस से यह माँग भी करना कि वह बनी इस्राईल को ऐसी आज़ादी दे कि वह अपने दीनी फ़राइज़ अदा कर सकें, ख़ास तौर से उन्हें ईद के दिन इकट्ठा हो कर कुर्बानी करने का मौक़ा दे, इस काम के

लिये चूंकि अभी मिस्र की आबादी मुनासिब न होगी इस लिये फ़िरऔन से माँग करना कि वह ईद मनाने और गाय की कुर्बानी करने के लिये बनी इस्राईल को बस्ती से दूर जाने दे और उन का रास्ता न रोके। आप पढ़ चुके हैं कि बनी इस्राईल फ़िरऔन और उस की क़ौम की सेवा करते थे इस लिये उन्हें यह पसंद न था कि यह लोग दो-चार दिन के लिये कहीं चले जायें, और उन्हें बेगार और मज़दूरी के लिये कोई आदमी न मिले हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन से जो माँग की उस का ज़िक्र "तौरेत" में इस तरह आता है-

"ख़ुदावंदे ख़ुदा, इस्राईल का ख़ुदा इस तरह फ़रमाता है कि मेरे लोगों को जाने दो ताकि वह मैदान में मेरे लिये ईद मनायें"।

फ़िरऔन ने कहा......मैं ख़ुदावंद को नहीं मानता, और मैं इस्राईल को जाने नहीं दूँगा, तब उन्हों ने कहा, इब्रानियों का ख़ुदा हम से मिला है, इस लिये हम को इजाज़त दे कि हम तीन दिन की मंज़िल बयाबान में जाकर ख़ुदावंद अपने ख़ुदा के लिये कुर्बानी करें......"

(ख़ुरूज बाब (5) (1-5)

यही वह मक़सद था जिस के लिये अल्लाह तआला ने उन दोनों हज़रात को हिदायत फ़रमाई कि

वह फ़िरऔन को वह संदेश देने के बाद जो अल्लाह का रसूल होने की हैसियत से उन्हें देना चाहिये, उस से यह माँग करें "बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे, उन पर मुसीबतों के पहाड़ मत तोड़ और देख हम तो तेरे पास तेरे रब की निशानी ले कर आये हैं और समझ ले कि भलाई उसी के लिये है जो अल्लाह की भेजी हुई हिदायत की उपासना करे"।

यह मुख़तसर इशारात हैं उस ख़िदमत के जिस पर हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिमस्सलाम को लगाया जा रहा था, और जिस का ख़ुलासा यह है कि–

☆ "फ़िरऔन उस की क़ौम और उस के सरकश सरदारों को सब से पहले तौहीद, रिसालत और आख़िरत की दावत दी जाये, और उन को सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश की जाये"।

☆ "फ़िरऔन से कहा जाये कि वह बनी इस्राईल पर ज़ुल्म न करे और उन को इकट्ठा हो कर ईद मनाने और कुर्बानी जैसे अहम फ़रीज़े (कर्तव्य) को अदा करने के लिये उन हज़रात के साथ मिस्र से जाने दे।

☆ बनी इस्राईल को अक़ाइद की ख़राबी और बेअमली के अंधेरे से निकाल कर ईमान और इस्लाम की रोशनी में लाया जाये।

कुरआन पाक में हज़रत मूसा (अलै०) का ज़िक्र

आगे बढ़ने से पहले एक बात ताज़ा कर लीजिये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के बारे में हमें सब से ज़्यादा एतबार के क़ाबिल वाक़िआत और हालात की जानकारी कुरआन मजीद से होती है। कुरआन मजीद और किताबों की तरह एक किताब नहीं है। आमतौर पर हर किताब का एक विषय होता है उसी के बारे में वाक़िआत और तफ़सीलात उस में जमा कर दी जाती हैं और विषय के एतबार से उस किताब में अलग-अलग बाब मुक़र्रर किये जाते हैं लेकिन कुरआन का अंदाज़ बिल्कुल अलग है। कुरआन पाक में एतक़ादी मसाइल, अख़लाक़ी हिदायात, शरीअत के अहकाम, इस्लाम की दावत, नसीहत, तनक़ीद, अच्छे और बुरों के अंजाम की तफ़सील, बुरे अंजाम से डरना, भले कामों के अच्छे बदले का ज़िक्र, तौहीद, आख़िरत और रिसालत की दलीलें, इबरत और नसीहत के लिये तारीख़ी वाक़िआत बार-बार बयान हुये हैं हर बार इसी बात को एक नये अंदाज़ से पेश किया जाता है और इस तरह सुनने वाले पर एक नया असर पड़ता है। कुरआन के इस तरह बयान करने के तरीक़े की क्या क्या ख़ूबियाँ हैं उन के बयान

करने का तो यहाँ मौक़ा नहीं, हाँ कुरआनी क़िस्सों के बारे में यह बात अच्छी तरह सामने रखिये कि कुरआन में कोई वाक़िआ भी क़िस्सा बयान करने के लिये नहीं लिखा गया है।

कुरआन एक दावत की किताब है। अरब में जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की दावत लोगों के सामने पेश की तो आप को और आप के साथियों को इस आंदोलन के मुख़्तलिफ़ मरहलों में मुख़्तलिफ़ हालात का मुक़ाबला करना पड़ा, उन हालात का मुक़ाबला कुछ आसान काम न था इस के लिये बड़ी तयारी की ज़रूरत थी कुरआन पाक इस तयारी का सब से अहम ज़रिया था अल्लाह तआला ने मुख़्तलिफ़ वक़्तों में इस्लामी जमाअत के लोगों को ज़रूरी हिदायात दीं उन को साबितक़दम रखने के लिये पिछली क़ौमों के हालात उन के सामने पेश किये और इस बात को उस के दिल में उतार दिया कि हक़ और बातिल की लड़ाई का अंदाज़ हमेशा कुछ एक सा ही रहा है, और हर ज़माने में इस्लामी मिशन के तहेत काम करने वालों को कुछ एक से ही हालात का सामना करना पड़ रहा है लेकिन जब यह लोग अपनी सीधी और सच्ची राह पर जमे रहे तो आख़िरकार बातिल को मैदान से भागना पड़ा साथ ही साथ जिन लोगों को दावत दी जा रही थी उन्हें बार-बार यह

हक़ीक़त याद दिलाई गई कि देखो इस्लाम की जो दावत हज़रत मुहम्मद (सल०) तुम्हारे सामने पेश कर रहे हैं वह कोई अनोखी दावत नहीं है हर ज़माने में अल्लाह के रसूल ने यही इस्लाम पेश किया है जो आज तुम्हारे सामने पेश किया जा रहा है फिर जिन लोगों ने इस दावत की मुख़ालिफ़त की उन के बारे में खोल कर बताया गया कि उन की मुख़ालिफ़त की क़िस्म क्या होती है और किस बुनियाद पर वह इस्लामी आंदोलन की मुख़ालिफ़त किया करते थे, इन तफ़सीलात के पेश करने का मक़सद यह था कि इस्लामी मिशन के मुख़ालिफ़ीन इस आईने में अपनी सूरत देख लें और यह बात उन की समझ में आ जाये कि जो रविश उन्हों ने अपना रखी है उस की हक़ीक़त क्या है और उस का अंजाम क्या होने वाला है इन तफ़सीलात को बयान करने में एक तरफ़ तो मोमिनीन की तसकीन और तसल्ली का सामान किया गया कि वह परेशान न हों उन की मुख़ालिफ़त करने वाले अगर सीधी राह पर न आयें तो आख़िरकार उन का अंजाम भी वही होगा जो उन से पहले लोगों का हुआ, दूसरी तरफ़ उन तफ़सीलात में मुख़ालिफ़ों के लिये बड़ी नसीहत का सामान रख दिया गया और उन्हें बता दिया गया कि आगे चल कर उन का अंजाम क्या होने वाला है।

कुरआनी वाक़िआत के बयान करने की इस ग़र्ज़ को पूरा करने के लिये हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का वाक़िआ कुरआन पाक में तफ़सील के साथ और जगह-जगह बयान हुआ है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़माना क़रीब का ज़माना था उन के बारे में बहुत सी बातें लोगों को मालूम थीं उन की दावत को जिन-जिन हालात से गुज़रना पड़ा था उसे भी बहुत से लोग जानते थे इस लिये कुरैश के सामने इस्लामी दावत पेश करते हुये बार-बार मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में मूसा अलैहिस्सलाम की दावत, उस की मुख़ालिफ़त के अंदाज़ और मुख़ालिफ़त करने वालों के अंजाम का ज़िक्र किया गया है और हर मौक़ा पर असर डालने वाले अंदाज़ में यह समझाया गया है कि आज वह कुरैश जो फ़िरऔन की तरह इस्लामी जमाअत के लोगों पर ज़ुल्म तोड़ रहे हैं, और उन्हें मक्के की ज़मीन से निकाल देने पर तुले हुये हैं अच्छी तरह समझ लें कि जब अल्लाह की हिदायत को ठुकराने और उस के रसूल को झुटलाने का अंजाम मिस्र के फ़िरऔन के सिलसिले में यह निकला कि वह और उस की क़ौम तबाह व बरबाद हो गई, तो आख़िर मक्के के कुरैश उसी अंजाम से दोचार क्यों न होंगे। उधर मोमिनीन के सामने हज़रत मूसा, हज़रत हारून का रवय्या पेश कर के उन्हें यह समझाया गया है कि

अगर वह भी साबितक़दमी दिखायेंगे और हक़ के रास्ते पर जमे रहेंगे, तो उन को भी अल्लाह की प्रसन्नता, आख़िरत की कामियाबी और इस दुनिया की सरबुलंदी उसी तरह नसीब होगी जिस तरह उन हज़रात को हासिल हुई।

क़ुरआन पाक में जहाँ-जहाँ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र आया है उसे निकाल कर देखिये, और उस से पहले और उस के बाद जो कुछ बयान हुआ है उस पर ग़ौर कीजिये तो इस बात के समझने में ज़्यादा परेशानी नं होगी कि उस मौक़ा पर हज़रत मूसा (अलै०) की ज़िन्दगी का यही क़िस्सा इस ख़ास अंदाज़ में क्यों बयान किया गया। इस बारे में कुरआन पाक में जो कुछ बयान हुआ है उन सब को सामने रखने से उन हालात का पूरा नक़शा सामने आ जाता है जो हज़रत मूसा, हज़रत हारून अलैहिमस्सलाम और उन के बुज़ुर्ग साथियों को पेश आये।

फ़िरऔन के दरबार में

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मिस्र पहुंचे, अपने भाई हज़रत हारून (अलै०) को अपने साथ लिया और उस काम को करना शुरू कर दिया जिस की ज़िम्मेदारी अल्लाह ने आप को सौंपी थी, इस काम की ज़िम्मेदारी पूरी करने के लिये आप फ़िरऔन के दरबार में भी

गये और उस के वज़ीरों और हुकूमत के बड़े-बड़े कर्मचारियों से भी बात चीत की, फ़िरऔन की क़ौम के आम लोगों के सामने भी अपनी दावत पेश की और ख़ुद अपनी क़ौम बनी इस्राईल को भी उन का भूला हुआ सबक़ याद दिलाया, और उन में सही दीनदारी पैदा करने की कोशिश की। आप की दावत बिल्कुल वही थी जो अल्लाह के रसूलों की दावत हुआ करती है आप ने उस दावत को निहायत ख़ूबी के साथ हर मौक़ा पर पेश फ़रमाया उस दावत का ख़ुलासा यह है-

एक अल्लाह के अलावा और कोई इबादत के लायक़ नहीं है वही इस क़ाबिल है कि उस की उपासना की जाये, इबादत उसी की होनी चाहिये, हर क़िस्म की ताक़त व कुव्वत का वही असल मालिक है इस लिये उस के अलावा न किसी से मदद माँगना सही है और न किसी की पनाह ढूंढना सही है।

अल्लाह की उपासना करने के लिये तुम्हें क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये यह सब कुछ अल्लाह ने मुझे बता कर तुम्हारे पास भेजा है इस लिये उस की रज़ामंदी (प्रसन्नता) हासिल करने के लिये तुम्हें मेरा कहना मानना चाहिये।

जो कोई मेरा कहना मानेगा, वह इस दुनिया में भी और आख़िरत में भी फ़ायदा उठायेगा, और जो

मेरी बताई हुई बातों पर ध्यान नहीं देगा वह नुक़सान में रहेगा। तुम्हारे इस असल नफ़ा और नुक़सान का हाल उस दिन मालूम होगा जब तुम दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे और अपने असली मालिक के सामने हाज़िर किये जाओगे उस दिन का आना यक़ीनी है और उसी दिन की कामियाबी असली कामियाबी है।

फ़िरऔन के सामने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने यह दावत तो पेश की ही इस के अलावा उन से एक और माँग भी की वह यह कि बनी इस्राईल को जिस ज़िल्लत की ग़ुलामी में फंसा लिया गया है उस से उन्हें छुटकारा दे दिया जाये और उन्हें यह मौक़ा दिया जाये कि वह अल्लाह की इबादत इस तरह कर सकें जिस तरह उन्हें इबादत करने का हुक्म है, ख़ासतौर से अल्लाह के लिये जानवरों की कुर्बानी करना, इस काम के लिये मूसा (अलै०) ने कहा कि बनी इस्राईल को मेरे साथ जाने दिया जाये ताकि मैं उन्हें दूर किसी मैदान में ले जाऊँ और वहाँ इकट्ठे हो कर अल्लाह के लिये जानवर कुर्बान कराऊँ।

फ़िरऔन पर मूसा (अलै०) की दावत का क्या असर हुआ होगा इस का अंदाज़ा आप आसानी के साथ लगा सकते हैं, एक ऐसा शख़्स जिस के दिमाग़ में उस के दरबारियों ने यह भर दिया हो कि वह आम इन्सानों से बुलंद कोई बड़ी हस्ती है सब से बड़े देवता

का अवतार है, सूरज बंसी है, जिस के सामने लाखों इन्सान सिर झुकाते हों, जिस को अपने मुल्क में सब से ज़्यादा ताक़त हासिल हो, जिस का मक़सद क़ानून हो, जिस के इशारे पर सारा मुल्क नाचता हो ऐसे फ़िरऔन के सामने अकेले दो इन्सान आयें, ऐसे इन्सान जिस के पास न दौलत हो, न हुकूमत, और न उन के पास लोगों की कोई भीड़ हो, जो उस क़ौम से संबंध रखते हों जो मुल्क में सब से ज़्यादा मज़लूम हो, जिन के भाई बन्द बेगार में पकड़े जाते हों, और फ़िरऔन की क़ौम के ग़ुलाम हों ऐसे दो शख़्स आयें और उस से कहें कि-

"तू भी आम इन्सानों की तरह एक इन्सान है, ख़ुदा नहीं, ख़ुदा का बन्दा है। उसी का पैदा किया हुआ है उसी के जिलाये जी रहा है और उसी की दी हुई रोज़ी पर पल रहा है। तेरी यह शान व शौकत और दौलत व हुकूमत बस कुछ दिनों की मेहमान है तुझे भी दूसरे इन्सानों की तरह मरना होगा और मरने के बाद अपने सारे कर्मों की सज़ा भुगतना पड़ेगी, तेरा फ़ायदा इसी में है कि तू बन्दा बन कर रहे, सरकशी से दूर रहे, इस दुनिया के असली बादशाह की बग़ावत छोड़ दे, और उस रास्ते पर चले जो तेरे असली मालिक ने हमें बताया है और जिसे बताने के लिये हम तेरे पास भेजे गये हैं"।

फिर यह भी कहें कि "जिस क़ौम को तूने और तेरी क़ौम ने ग़ुलाम बना रखा है वह भी इन्सान हैं उन के साथ इन्सानों की तरह व्यवहार होना चाहिये उन्हें यह मौक़ा मिलना चाहिये कि वह अपने ख़ुदा की इबादत जिस तरह चाहें कर सकें जिस तरह उन्हें इबादत करने का हुक्म है, और यह माँग करें कि तू उन्हें हमारे साथ भेज दे"।

ज़ाहिर है कि ऐसा तो नहीं हुआ होगा कि मूसा अलैहिस्सलाम और उन के भाई ने यह सारी बातें पहले दिन दरबार में जाते ही पेश कर दी हों बल्कि यही हुआ होगा कि उन हज़रात ने अल्लाह तआला की दी हुई सुझ बूझ से काम लेते हुये और उस की वह्‍ी पर अमल करते हुये उन तमाम बातों को हिकमत और मौक़े के लिहाज़ से पेश किया होगा, लेकिन बहरहाल यह सब बातें फ़िरऔन के सामने आईं और उन का वही असर हुआ जो होना चाहिये था।

फिर उन हज़रात ने यह भी नहीं किया कि उन्हें जो कुछ कहना था वह सिर्फ़ फ़िरऔन से कहा और यह इन्तिज़ार करते रहे कि जब तक फ़िरऔन का तख़्ता न उलट दिया जाये उस वक़्त तक कोई दूसरा काम न करें, बल्कि उन्हों ने अल्लाह का संदेश मुल्क के सब लोगों के सामने पेश किया और उन्हें यह भी बताया कि उपासना और इबादत के लायक़ फ़िरऔन

नहीं, बल्कि वह अल्लाह है जो अपनी ज़ात और सिफ़ात में अकेला है।

पहले तो फ़िरऔन ने उन हज़रात की बातों पर ज़्यादा धयान नहीं दिया, कोशिश की कि समझा बुझा कर, या डरा धमका कर उन्हें ख़ामोश कर दे, एक मौक़ा पर बोला कि "तुम वही तो हो जिस ने हमारे घराने में परवरिश पाई थी, और बरसों हमारे ही यहाँ रहे थे और फिर तुम ने यह हरकत की कि एक शख़्स को मार डाला और यहाँ से भाग गये, तुम्हें तो हमारा शुक्रिया अदा करना चाहिये था कि हम ने तुम से कुछ नहीं कहा और तुम चले हो हमें रास्ता बताने, यह हरकत ठीक नहीं इस से रूक जाओ"।

हज़रत मूसा (अलै०) ने फ़रमाया, यह ठीक है कि मुझ से अंजाने में एक ग़लती हो गई थी, और मैं तुम लोगों के डर से यहाँ से चला भी गया था लेकिन अल्लाह तआला ने मेरी ग़लतीं को माफ़ कर दिया और मुझे अपनी हिदायत अता फ़रमाई, मुझे अपना रसूल बनाया, रह गई यह बात कि तुम मुझ पर उस ज़माने के खिलाने पिलाने का एहसान जताओ तो यह भी तो देखो कि तुम ने बनी इस्राईल की क़ौम के साथ क्या व्यवहार कर रखा है, क्या अच्छे व्यवहार के यही अर्थ हैं कि किसी एक शख़्स के साथ तो कुछ नेकी कर दी जाये और पूरी क़ौम को सारी उम्र के

लिये बेकार और ग़ुलामी में फंसा लिया जाये।

फ़िरऔन को उम्मीद होगी कि उस की बातें सुन कर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उसी तरह उस को झुक कर सलाम करेंगे जिस तरह हर शख़्स किया करता था उस के कान इन्तिज़ार कर रहे होंगे कि मूसा अलैहिस्सलाम की ज़ुबान से शुक्रिये के शब्द निकलें वह उसे "वली नेमत" कह कर पुकारें, हाथ जोड़ कर जान बख़्शी का शुक्रिया अदा करें और आगे के लिये शाही महरबानी और कृपा की दरख़्वास्त (निवेदन) करें लेकिन जब उस ने अपनी उम्मीद (आशा) के ख़िलाफ़ यह देखा कि भरे दरबार में उन लोगों ने ऐसी बात कह दी जो आज तक कभी न कही गई थी तो उस ने दरबारियों के सामने ही उन को ज़लील (अपमानित) करने के इरादे से झिंझला कर पूछा "अच्छा यह जो तुम कहते हो कि तुम को उस ख़ुदा ने भेजा है जो इस संसार का मालिक है, तो ज़रा यह बताओ उस से तुम्हारा मतलब क्या है? और वह रब है कौन? हज़रत मूसा (अलै०) ने फ़रमाया "मैं उस ज़ात को इस संसार का आक़ा कह रहा हूँ जो आसमानों का मालिक है ज़मीन का मालिक है और हर उस चीज़ का मालिक है जो ज़मीन और आसमान के बीच है, उसी ने हर चीज़ को पैदा फ़रमाया है और वही सब की देख भाल करता है"।

फ़िरऔन ने सुना जवाब क्या देता उस ने तो अपने दरबारियों के सामने दावा किया था कि "मैं तुम्हारा सब से बड़ा रब हूँ" अब एक शख़्स दरबार में खड़ा साफ़-साफ़ कह रहा है कि रब तो कोई और है, रब तो वह है जिस ने इस संसार को पैदा किया, जो इस संसार का मालिक है, और जो इस का इन्तिज़ाम कर रहा है। ज़ाहिर है कि अब इस दावे के बाद फ़िरऔन को अपने दरबारियों के इतमीनान के लिये यह साबित करना चाहिये था कि नहीं, असली रब मैं ही हूँ, कोई और नहीं लेकिन यह बात तो फ़िरऔन के बस से बाहर थी अब क्या करता उस ने बात को हंसी में उड़ाने की कोशिश की, दरबारियों से बोला "सुनते हो? यह हज़रत क्या कह रहे हैं?"

हज़रत मूसा (अलै०) ने तुरन्त बात पूरी करते हुये फ़रमाया, जी हाँ! वही रब जो तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे बाप दाद का भी"। फ़िरऔन ने फिर हज़रत मूसा की बात पर ध्यान दिये बग़ैर दरबारियों के ध्यान को उधर से हटाने के लिये कहा "देखा आप ने, यह हज़रत जो आप की तरफ़ रसूल बना कर भेजे गये हैं पागल भी हैं" हज़रत मूसा (अलै०) ने अपनी तक़रीर जारी रखी फ़रमाया "जी हाँ वही रब जो पूरब का भी रब है और पच्छिम का भी और जो हर उस चीज़ का मालिक है जो यहाँ मौजूद है अगर

कुछ अक़्ल है तो संसार के इस इन्तिज़ाम (व्यवस्था) को देखो और समझो कि मैं क्या कह रहा हूँ"।

अब फ़िरऔन ने एक और पैंतरा बदला, बोला "अच्छा यह तो बताओ जो लोग अब से पहले होकर गुज़रे हैं उन का क्या अंजाम होगा?" इस सवाल में एक बड़ी मक्कारी की बात छुपी हुई थी फ़िरऔन को यक़ीन था कि इस का जवाब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम इस के अलावा और क्या देंगे कि वह सब भी गुमराह थे और अगर उन्हों ने यह कहा तो सुनने वाले दरबारी उन के ख़िलाफ़ ग़ुस्से से भड़क जायेंगे, उन्हें यह कैसे बरदाश्त होगा कि उन के बड़े बूढ़ों को कोई उन के सामने गुमराह कहे, लेकिन नबी इस क़िस्म की बहसों में नहीं पड़ा करते वह साफ़ और सीधी बात कहते हैं चुनाचे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "मेरा रब उन के बारे में ख़ूब अच्छी तरह से जानता है, कोई बात न उस की नज़र से छुपी हुई हो सकती है और न वह भूलता है वही रब जिस ने इस ज़मीन को तुम्हारे लिये बिछौने की तरह बिछा दिया है इस में तुम्हारे लिये रास्ते निकाल दिये हैं आसमान से पानी बरसाया फिर उस से हर क़िस्म के जोड़े पैदा किये ख़ुद भी खाओ और अपने जानवरों को भी चराओ, इन सब बातों में अक़्ल वालों के लिये बड़ी निशानियाँ हैं"।

देखा आप ने इस तक़रीर का हाल, मूसा अलैहिस्सलाम ने साफ़-साफ़ कह दिया कि इन बातों में उलझने से कोई फ़ायदा नहीं कि जो लोग मर चुके हैं उन के साथ अल्लाह क्या मुआमला फ़रमायेगा, अल्लाह तआला बहुत जानकार है वह जानता है कि किस को कैसा बदला मिलना चाहिये जिन बातों का संबंध अल्लाह तआला से है उन में उलझने के बदले इन्सान को उन नेमतों पर सोच विचार करना चाहिये जो उस के चारों तरफ़ फैली हुई हैं उसे अक़्ल से काम लेकर फ़ैसला करना चाहिये कि जो उन नेमतों का पैदा करने वाला है उस के क्या हुक़ूक़ उस पर लागू होते हैं और उसे उस पैदा करने वाले के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये, यह तरीक़ा तो समझदारों का है इस के अलावा कोई दूसरा तरीक़ा सही नहीं है।

फ़िरऔन इस क़िस्म की बातों को सुनने के लिये तयार न था वह यह सब बातें सुन कर ग़ुस्से में आ गया, बोला "यह कुछ नहीं मालिक और आक़ा हम हैं हमारे अलावा अगर किसी को हाकिम माना तो जेल में सड़ा दूँगा"।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने इस धमकी का भी असर नहीं लिया फ़रमाया अच्छा अगर मैं कोई ऐसी खुली निशानी दिखाऊँ जिसे देख कर तुम यह समझ लो कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ अपनी तरफ़ से नहीं

कह रहा हूँ बल्कि मुझे ख़ुदा ने ही यह संदेश दे कर भेजा है तब तो तुम लोग मेरी बात मान लोगे ?"।

फ़िरऔन बोला "अच्छा लाओ दिखाओ क्या है" ?

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दी और वह देखते ही देखते एक साँप बन गई फिर आप ने अपना हाथ निकाल कर दिखाया तो हर देखने वाले ने देखा कि वह बिल्कुल चमक रहा था।

अब फ़िरऔन क्या कहता, तुरन्त ही अपने दरबारियों की तसल्ली के लिये बोला–

यह तो खुले हुये जादूगर निकले, चाहते हैं कि अपने जादू के ज़ोर पर तुम लोगों को तुम्हारे देश से निकाल कर बाहर कर दें अब तुम ही बताओ कि इन का क्या इलाज किया जाये ?"

दरबारियों ने सोचा कि यह तो बहुत आसान है कि इन साहब की गर्दन तुरन्त उड़ा दी जाये लेकिन वह तो जानते थे कि जो बातें उन्हों ने आज दरबार में कही हैं वह और भी बहुत से लोगों से कहते रहे हैं, हो सकता है कि कुछ लोगों के दिलों में उन की बातों ने कुछ असर भी पैदा कर दिया हो इस लिये जब इस बात का चर्चा होगा कि उन की लाठी किस तरह साँप बन गई तो लोगों के दिलों में इन बातों का वज़न और बढ़ जायेगा इस लिये यह फ़ितना इन के

मार डालने से नहीं ख़त्म होगा बल्कि इस का इलाज कुछ और ही होना चाहिये इस लिये दरबारियों ने फ़िरऔन से कहा-

"जहाँ पनाह! इन को और इन के भाई को अभी कुछ दिनों के लिये टाल दीजिये और कुछ लोगों को मुल्क में यह हुक्म लेकर दौड़ा दीजिये कि तमाम जादूगर जमा हो जायें जो जादू में माहिर हों, जादूगर आ जायें तो फिर देखा जायेगा जादू का तोड़ जादू से ही करना होगा।

जादूगरों से मुक़ाबला

पूरे मुल्क में आदमी शाही हुक्म लेकर दौड़ गये और थोड़े दिनों में बड़े-बड़े माहिर जादूगर जमा हो गये।

फ़िरऔन ने मूसा अलैहिस्सलाम से कहा "अब हम तुम्हारे जादू का मुक़ाबला जादू से करेंगे कोई दिन मुक़र्रर कर लो कि हम तुम उस दिन इकट्ठा हों और एक खुले मैदान में मुक़ाबला हो जाये" मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "अच्छी बात है, तुम्हारे जश्न का दिन इस काम के लिये ठीक रहेगा कुछ दिन चढ़े लोगों को इकट्ठा कर लो"।

बात तय हो गई फ़िरऔन ने पूरी तयारी शुरू कर दी उधर मूसा अलैहिस्सलाम ने फिर आख़िरी बार

लोगों को समझाने की कोशिश की, आप ने उन तमाम जादूगरों और दूसरे लोगों को पूरी बात समझाई, तौहीद, रिसालत, और आख़िरत की हक़ीक़त बयान फ़रमा कर इस्लाम की दावत दी और फ़रमाया "देखो, जो कुछ तुम कर रहे हो, इस में तुम्हारे लिये बुराई ही बुराई है अपने इस मनगढ़त शिर्क को अल्लाह से संबंधित न करो उस के संदेश को इस तरह न ठुकराओ कहीं ऐसा न हो कि उस का अज़ाब तुम पर टूट पड़े जो कोई अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी करता है वह बरबाद हो कर रहता है"।

लोगों ने जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बातें सुनीं तो कुछ सोचने पर मजबूर हुये इस सूरतेहाल का अंदाज़ा करते ही फ़िरऔन और उस के सरदारों में फिर खलबली मच गई सब ने मिल कर सलाह की और बहुत सोच विचार के बाद तैय हुआ कि इधर से भी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ लोगों को भड़काया जाये और लोगों के ख़यालात को ठीक किया जाये चुनाचे उन्हों ने वही हथियार इस्तेमाल किये जो आज भी ऐसे मौक़ों पर इस्तेमाल किये जाते हैं।

उन्हों ने भी मुल्क की दुहाई दी और अपने कल्चर (सभ्यता) का वास्ता दे दे कर समझाना शुरू किया कि "तुम को मालूम भी है यह दोनों कौन हैं? यह दोनों बड़े जादूगर हैं यह चाहते हैं कि अपने जादू

के ज़ोर से तुम को तुम्हारे देश से निकाल दें, और तुम्हारे पसंदीदा और बेहतरीन धर्म को ख़त्म कर के रख दें।

फ़िरऔन की बातों का असर लोगों पर हुआ और जो लोग मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ बढ़ सकते थे वह रूक कर रह गये लेकिन मूसा अलैहिस्सलाम की बातों का असर बिल्कुल मिटाने के लिये इतना ही काफ़ी न था अगर मूसा अलैहिस्सलाम ने जो कुछ दिखाया था वह सब जादू था तो फिर मुल्क में बड़े-बड़े जादूगर पड़े थे उस ज़माने में जादू का बड़ा ज़ोर था इस लिये खुली हुई बात थी कि एक ऐसे जादूगर का मुक़ाबला जो इस तरह मुल्क और क़ौम के ख़िलाफ़ साज़िश कर रहा हो अच्छी तरह डट कर होना चाहिये चुनाचे बड़े-बड़े जादूगर कील काँटे लेकर मैदान में आ गये और लोगों ने समझ लिया कि आज जो जीता वही मैदान मार ले जायेगा, अगर मूसा ने बड़े-बड़े जादूगरों को भगा दिया तो फिर यह जादूगर नहीं यह जो कुछ कहते हैं वही सच होगा और अगर यह जादूगर हैं तो फिर आज यह टिक नहीं सकते इन्हें भागना ही पड़ेगा।

मुक़ाबला सख़्त था, मुक़ाबले के फ़ैसले पर फ़िरऔन की हुकूमत और उस की इज़्ज़त का सवाल था लेकिन जादूगर अपने सामने कोई ऊँचा मक़सद तो रखते न

थे, उन का काम तो अपने करतब (तमाशा) दिखा कर खाना कमाना ही था उन्हों ने जब मौक़ा की अहमियत का अंदाज़ा लगा लिया तो पेशावरों की तरह मुआमला तैय कर लेना ही मुनासिब समझा बोले- सरकार! अगर हम जीत गये तो हमारा इनआम तो हम को मिलेगा ना?"

फ़िरऔन ने कहा "क्यों नहीं, हम तुम्हें अपना ख़ास दरबारी बना लेंगे"।

यह सब से बड़ा उहदा (पद) था जो फ़िरऔन किसी को दे सकता था जादूगरों को शायद इतना ऊँचा उहदा मिल जाने की उम्मीद भी न हो, फ़िरऔन का यह फ़रमान सुन कर फूले न समाये, मूसा (अलै०) से बोले "कहो पहले तुम अपना जादू चलाओगे या हम अपना दावं चलें?"

मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "पहले तुम ही अपना दावं चलो"।

जादूगरों ने पहले अपनी लकड़ियाँ और रस्सियाँ फेंकीं और बोले "फ़िरऔन की इज़्ज़त की क़सम हम ज़रूर जीतेंगे" उन का जादू इतना ज़बरदस्त था कि उस ने लोगों की नज़रबन्दी कर दी लोगों को ऐसा लगने लगा कि लाठियाँ और रस्सियाँ इधर उधर दौड़ रही हैं चारों तरफ़ एक डर और रोब का समाँ बंध गया, यह हालत देख कर मूसा (अलै०) को डर हुआ

कि कहीं ऐसा न हो कि लोग उन के जादू से प्रभावित होकर मेरी पेश की हुई दावत को झूटा समझ बैठें अभी यह ख़याल दिल में आया ही था कि अल्लाह तआला ने उन को तसल्ली दी फ़रमाया गया-

"मूसा! डरने की कोई बात नहीं है जीत तुम्हारी ही होगी यह तुम्हारे हाथ में लाठी है ज़रा इसे डाल तो दो और देखो कि उन्हों ने जो स्वांग रचाया है वह अभी-अभी ख़त्म हो जाता है उन्हों ने जो कुछ बनाया है वह जादू ही तो है और भला कहीं जादू से कुछ हुआ करता है"।

मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी लाठी फेंक दी वह अज़दहा बन गई यह अज़दहा जिधर गया वहाँ से जादू का असर ख़त्म होता गया और लोगों ने देखा कि जादूगरों का सारा किया धरा थोड़ी ही देर में ख़त्म हो गया।

अजब समाँ था फ़िरऔन और उस के सारे दरबारी खड़े थे लोगों की आँखें फटी की फटी रह गईं उन की समझ में कुछ नहीं आया कि यह क्या हो रहा है।

उधर जादूगरों का अजब हाल था उन्हें यक़ीन था कि जादू के फ़न में उन्हें कोई हरा नहीं सकेगा अब जो उन्हों ने देखा कि उन का जादू थोड़ी ही देर में ख़त्म हो गया तो उन की आँखों के सामने बिजली सी

चमक गई पूरी हक़ीक़त उन के सामने आ गई, उन्हें यक़ीन हो गया कि मूसा अलैहिस्सलाम जो कुछ कह रहे हैं बिल्कुल ठीक कह रहे हैं और यह वास्तव में अल्लाह के रसूल हैं।

जादूगरों को यक़ीन आ गया कि वास्तव में असल मालिक और आक़ा अल्लाह है फ़िरऔन नहीं। मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के रसूल हैं वह सच कह रहे हैं कि ज़िन्दगी यही ज़िन्दगी नहीं है बल्कि इस के बाद एक हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी और आने वाली है और असल कामियाबी उसी ज़िन्दगी की कामियाबी है इस यक़ीन और ईमान के बाद उन की नज़र में फ़िरऔन की कोई हक़ीक़त बाक़ी नहीं रही अब न उन्हें फ़िरऔन की सज़ा का डर रहा और न उस के इनआम (पुरस्कार) का लालच, क्योंकि फ़िरऔन की सज़ा और उस के पुरस्कार का संबंध तो सिर्फ़ इस दुनिया की ज़िन्दगी से ही हो सकता था, लेकिन अब उन के सामने इस के बाद आने वाली और हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी थी उस की कामियाबी असल कामियाबी थी और उस कामियाबी का निर्भर अल्लाह पर ईमान और उस के रसूल को सच मानने पर था।

यह सब बातें जादूगरों के सामने इस तेज़ी के साथ आईं कि उन्हों ने कुछ ख़याल नहीं किया और न यह सोचा कि वह जो कुछ करने जा रहे हैं उस के

लिये यह वक़्त मुनासिब भी है या नहीं, बल्कि तुरन्त ही सजदे में गिर पड़े, और बोले "हम ईमान लाये उस ख़ुदा पर जो दोनों संसार का पालने वाला और मालिक है वह जिस की बन्दगी की दावत मूसा और हारून (अलै०) देते हैं"।

फ़िरऔन इस हादसे के लिये बिल्कुल तयार न था जादूगरों की इस हरकत से तो सारा खेल ही बिगड़ गया मूसा अलैहिस्सलाम की बात को हल्का करने और उन की दावत का असर मिटाने के लिये उस ने जो चाल चली थी बजाये लाभदायक होने के उसी पर उलट गई, भला जब इतने बड़े-बड़े जादूगरों ने जान पर खेल कर फ़िरऔन के सामने इतनी भीड़ में यह एलान कर दिया कि मूसा अलैहिस्सलाम जो कुछ पेश कर रहे हैं वह जादू नहीं है तो फिर अब क्या गुंजाइश बाक़ी रह गई कि उन्हें जादूगर कह कर लोगों को उन की बात सुनने से रोका जा सके।

आगे बढ़ने से पहले एक बात पर ध्यान दीजिये, मूसा अलैहिस्सलाम की दावत सामने है फ़िरऔन और उस के दरबारियों को मूसा अलैहिस्सलाम तरह-तरह से समझाने की कोशिश कर रहे हैं, एक मुद्दत से यह कोशिशें जारी हैं मगर न फ़िरऔन अपनी जगह से हटता है और न उस के दरबारी सीधे रास्ते पर आते हैं लेकिन जादूगरों को देखिये मूसा अलैहिस्सलाम की

दावत उन के सामने भी आई उन्हों ने भी उसे सुना और समझा लेकिन जैसे ही मूसा अलैहिस्सलाम के चमत्कार को देखा उन्हें यह यक़ीन हो गया कि यह जादू नहीं है उन्हों ने फिर एक मिनट के लिये भी रुकना मुनासिब नहीं समझा उसी वक़्त लोगों की भीड़ में ईमान का एलान कर दिया इतना भी इन्तिज़ार न किया कि लोग इधर उधर चले जायें तो बाहर जा कर मूसा अलैहिस्सलाम के हाथ पर ईमान ले आयेंगे।

यह दोनों सूरतें आप के सामने हैं, इन पर सोच विचार कीजिये आसानी से समझ में आ जायेगा, हिदायत का रास्ता रोकने वाली सब से बड़ी रूकावट दौलत और हुकूमत का नशा है। इन्सान जब किसी तरह भी अधिकार का मालिक हो जाता है और हुकूमत के अधिकार पा कर अल्लाह के बन्दों का ख़ुदा बनने लगता है तो फिर उस के लिये बड़ा मुश्किल हो जाता है कि वह अपने मक़ाम को छोड़ कर ख़ुदा बनने के बदले अल्लाह का बन्दा बन कर रहे। इन्सानों में यह ख़ुदाई कभी बादशाहत के रंग में आती है और कभी क़ौमी लीडरों के भेस में, और कभी धर्मगुरू की शक्ल में।

फ़िरऔन ने मौक़े की नज़ाकत को अच्छी तरह जान लिया उस ने तुरन्त पैंतरा बदला और बोला, "अच्छा तो तुम मेरी इजाज़त के बग़ैर ही ईमान लाने

का एलान कर बैठे? अब मालूम हुआ कि मूसा (अलै०) असल में तुम सब के गुरू हैं और तुम सब ने मिल कर हुकूमत के ख़िलाफ़ एक बहुत बड़ी साज़िश का जाल फैलाया है, तुम चाहते हो कि इस देश के रहने वालों को निकाल कर बाहर करो, और ख़ुद यहाँ के मालिक बन बैठो। लेकिन सुन लो! तुम्हारी यह साज़िश कामियाब नहीं होगी तुम्हें अभी पता चल जाता है कि तुम्हारा क्या अंजाम होगा हम तुम्हारे हाथ पैर कटवा कर तुम सब को सूली पर चढ़ा देंगे, और तुम्हें मालूम हो जायेगा कि कौन सख़्त सज़ा दे सकता है हम या कोई और"।

फ़िरऔन के क्रोध को देख कर लोगों पर सन्नाटा छा गया, फटी हुई आँखें एक दूसरे को देखने लगीं और वह ख़ूनी मंज़र (दृश्य) जिस का अभी-अभी एलान हुआ था, जैसे कि सब के सामने फिर गया।

लेकिन मुजरिमों का क्या हाल था? उन्हें कोई डर और घबराहट न थी इस एलान को उन्हों ने एक कान से सुना और दूसरे कान से उड़ा दिया, ईमान की ताक़त भी अजीब है उस के सामने कोई दूसरी ताक़त आ नहीं सकती जिस के दिल में अल्लाह का डर बैठ जाये, उस के सामने कोई डर, डर नहीं रहता जो जादूगर अभी कुछ देर पहले पुरस्कार की भीक माँग रहे थे, उन्हों ने यह एलान सुना सज्दे से सिर उठाया

और बोले-

"इस से क्या होता है, जो हक़ीक़त हमारे सामने खुल कर आ चुकी है उस के मुक़ाबले में हम आप की बात को कोई वज़न नहीं दे सकते हमें कुछ डर नहीं आप का जो जी चाहे कर डालिये, ज़्यादा से ज़्यादा इसी ज़िन्दगी पर आप का बस चल सकता है, इस के बाद आप कुछ भी नहीं कर सकते हमें लौट कर तो बहरहाल उसी आक़ा के पास जाना है और अब तो हम उसी को मालिक मान चुके। हमें उस के रहम व कृपा से उम्मीद है कि जब हम ने उस पर ईमान लाने में पहल की है तो वह हमारी इस वक़्त तक की ग़लतियों और कमियों को ज़रूर माफ़ फ़रमा देगा, और उस के सच्चे रसूल के मुक़ाबले में आप ने मजबूर कर के हम से जो यह जादू का खेल खिलवाया है उसे माफ़ फ़रमायेगा, अब हम पर यह हक़ीक़त खुल चुकी है कि अल्लाह ही सब से बेहतर आक़ा और मालिक है, उस की ज़ात को फ़ना नहीं। इन्सान की सब से बड़ी बदनसीबी यह है कि वह उस के सामने बाग़ी की हैसियत से पेश हो, ऐसे बाग़ियों के लिये उस के यहाँ जहन्नम है, जहाँ इन्सान ज़िन्दगी से उकताया हुआ होगा लेकिन उस को मौत न आयेगी कि उसे मुक्ति हो जाये, कामियाब वह है जो उस के सामने मोमिन की हैसियत से पेश किया जाये और उस

के अच्छे कर्म भी उस के साथ हों ऐसे ही लोगों के लिये ऊँचे-ऊँचे मक़ाम हैं रहने के लिये बाग़ात हैं जिन में नहरें जारी होंगी और जहाँ यह लोग हमेशा के लिये रहेंगे। यह इनआम उन लोगों को मिलेगा जिन्हों ने अपनी ज़िन्दगी अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ संवार ली, फिर जो आप सज़ा का हुक्म सुना रहे हैं तो यह भी सोच लीजिये कि हम ने आप का क्या बिगाड़ा है, हमारा कुसूर इस के अलावा क्या है कि जब हमारे सामने रब की निशानियाँ खुल कर आ गई और हक़ हम पर ज़ाहिर हो गया तो हम उस पर ईमान ले आये अब आप का जो जी चाहे कर लीजिये।

और हम तो अपने मालिक से यही दुआ करते हैं कि "ऐ मालिक! तू हम पर अपनी रहमत की ऐसी बारिश फ़रमा कि हम तेरी राह में मज़बूती के साथ डटे रहें और जिस हक़ को हम ने अपनाया है उस के रास्ते से हमारे पावं कभी भी डगमगाने न पायें, हम हर तरह की मुसीबतें ख़ुशी ख़ुशी बरदाश्त कर सकें, मौत भी हमें हमारे मक़ाम से न हटा सके, हमें मौत आये तो इस हाल में आये कि हम तेरे आज्ञाकारी हों"।

नवमुस्लिमों की इस तक़रीर ने दरबार का रंग ही पलट दिया फ़िरऔन ने क्या कुछ कहा और हो कुछ गया। लोगों को इस लिये इकट्ठा किया गया था कि

उन पर मूसा अलैहिस्सलाम की बातों से जो कुछ असर पड़ गया है उसे धो डाला जाये, लेकिन जब वह इस मंज़र को देख कर लौटे तो उन की नज़र में मूसा अलैहिस्सलाम की अहमियत सैकड़ों गुना बढ़ चुकी थी और अब फ़िरऔन और उस के दरबारी इस फ़ितने को दबाने के लिये कुछ नये उपाय सोच रहे थे।

बनी इस्राईल में इस्लामी दावत के प्रभाव

मूसा अलैहिस्सलाम एक तरफ़ तो फ़िरऔन और उस की क़ौम को अल्लाह के धर्म की तरफ़ बुला रहे थे और दूसरी तरफ़ बनी इस्राईल का सुधार और उन में धार्मिक रूह पैदा करने की लगातार कोशिश कर रहे थे। ग़ुलामी इन्सानियत की सब से बड़ी लानत है, और अल्लाह का धर्म तो कभी भी ग़ुलामी की हालत में पनप्ता ही नहीं, अल्लाह का धर्म इन्सान को हर तरह की ग़ुलामी और महकूमी से निकाल कर सिर्फ़ एक अल्लाह की ग़ुलामी में लाना चाहता है इस लिये जो क़ौमें अपनी कमज़ोरी की वजह से दूसरों की महकूम हो जाती हैं उन का संबंध अल्लाह तआला के धर्म से कम होता चला जाता है, यही हाल बनी इस्राईल का था, मुद्दतों से ग़ुलामी की ज़िन्दगी बसर करते-करते उन का संबंध भी अल्लाह के धर्म से

बहुत कमज़ोर हो गया था और उन में तरह-तरह की ख़राबियाँ पैदा हो गई थीं, इन में सब से बड़ी ख़राबी जो आमतौर पर ग़ुलाम क़ौमों में पैदा हो जाती है यह थी कि उन्हें आशयाने से ज़्यादा "क़फ़स" प्यारा था उन के लिये महकूमी की ज़िन्दगी आसान थी लेकिन ग़ुलामी की बेड़ियों को उतार फेंकने के लिये हाथ पाँव मारना बहुत ही मुश्किल था।

बनी इस्राईल के लिये मूसा अलैहिस्सलाम की दावत कोई नई दावत न थी बल्कि वह तो उन का भूला हुआ सबक़ ही था लेकिन उन के लिये भी यह बड़ा मुश्किल काम था कि वह पूरी क़ौम के साथ मूसा अलैहिस्सलाम का साथ देते ख़ासतौर पर उस वक़्त जबकि मूसा (अलै॰) की मुख़ालिफ़त में फ़िरऔन ने उन की क़ौम बनी इस्राईल को सज़ा का निशाना बनाया तो उन में से बहुत से लोग चिल्ला उठे।

फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने फ़िरऔन को ध्यान दिलाया कि "अगर मूसा और उस की क़ौम को इस तरह ढील मिलती रही तो यह बड़ा फ़साद मचायेंगे, और आप के साथ आप के सब देवताओं को मैदान से हटा देंगे"।

इस समस्या पर क़ाबू पाने के लिये यह तय किया गया कि बनी इस्राईल की क़ौमी ताक़त को ख़त्म करने के लिये उन के लड़कों को पैदा होते ही मरवा

डाला जाये सिर्फ़ लड़कियाँ ही बाक़ी रहें। आप को याद होगा कि उस फ़िरऔन ने भी यही हुक्म दिया था जो मूसा अलैहिस्सलाम के जन्म के वक़्त मिस्र का हाकिम था, और फिर यही हुक्म इस फ़िरऔन ने भी लागू कर दिया जो अब मिस्र पर हुकूमत कर रहा था इस हुक्म की वजह से बनी इस्राईल में बड़ी बेचैनी फैली। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने क़ौम को हिम्मत दिलाई और उन के दिलों में अल्लाह के ईमान को ताज़ा करते हुये हिदायत फ़रमाई कि वह इस मुसीबत में साबितक़दम रहें और अल्लाह तआला से मदद की दुआ करते रहें आप ने फ़रमाया कि–

"यह मुसीबत तो कुछ दिनों के लिये है बहुत जल्द दूर हो जायेगी, मुल्क का मालिक अल्लाह है वह जिसे चाहता है मुल्क का इन्तिज़ाम सौंप देता है ज़रूरत इस बात की है कि उस के मोमिन बन्दे अपने आप को उस की नज़र में इस लायक़ बना लें कि वह उन्हें दुनिया में भी कामियाब कर दे, वरना यह तो तैय है कि अंजाम के हिसाब से कामियाबी उन्हीं लोगों का हिस्सा है जो उस की उपासना करते रहते हैं और जिन्हें हर वक़्त यह फ़िक्र लगी रहती है कि कहीं उन का मालिक उन से नाराज़ न हो जाये"।

मूसा अलैहिस्सलाम की इन नसीहतों (सतुपदेश) के जवाब में लोगों ने कहा "हाँ यह तो ठीक है लेकिन

क्या करें हम तो उस वक़्त भी मुसीबतें झेल रहे थे जब आप यह तहरीक (आंदोलन) लेकर नहीं आये थे और आज भी सारी आफ़तें हमारे लिये हैं"।

मूसा अलैहिस्सलाम ने फिर समझाया और फ़रमाया कि देखो वह वक़्त दूर नहीं है कि जब अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मन को बरबाद कर देगा और तुम्हें ज़मीन में अपनी हुकूमत देगा उसी वक़्त अल्लाह तआला यह अंदाज़ा फ़रमायेगा, कि तुम उन काफ़िरों और मुश्रिकों के चंगूल से आज़ाद हो कर ज़मीन के उस हिस्से में जहाँ तुम को हुकूमत और अधिकार नसीब होगा क्या कार्य करते हो"।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने पूरी कोशिश की कि इस मज़लूम और दबी हुई मुसलमान क़ौम में धर्म की सही रूह फूंकें उन के दिलों में अल्लाह पर ईमान और आख़िरत के यक़ीन को ताज़ा करें, और इस तरह उन में यह हौसला पैदा करें कि वह कुफ़्र और शिर्क की ग़ुलामी की बेड़ियों को काट फेंकें, लेकिन कुछ नवजवानों के अलावा और कोई मूसा (अलै०) का साथ देने के लिये तयार न हुआ। क़ौम के बड़े बूढ़ों के दिलों पर फ़िरऔन और उस की क़ौम के सरदारों का डर कुछ इस तरह छाया हुआ था कि वह यह सोच भी नहीं सकते थे कि इतनी बड़ी ताक़त के मुक़ाबले में भी कुछ किया जा सकता है और बात तो यह है

कि फ़िरऔन के अत्याचार भी हद से बढ़े हुये थे और उस के मुक़ाबले में जान पर खेल जाने के लिये बहुत ही मज़बूत ईमान की ज़रूरत थी।

नवजवानों के सामने डर और ख़ौफ़ कम होते हैं उन के दिलों में इंक़िलाब का जोश होता है और जब कोई बात उन की समझ में आ जाये तो फिर वह उस के लिये सब कुछ कर डालने के लिये तयार हो जाते हैं। यही हाल बनी इस्राईल के मुसलमान नवजवानों का था, मूसा अलैहिस्सलाम ने जब क़ौम से फ़रमाया कि "भाईयो! जब तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो फिर धर्म के रास्ते में आने वाली मुश्किलों से क्यों घबराते हो? उसी की मदद पर भरोसा रखो, और मैं जो कुछ कहता हूँ उस के अनुसार काम करने के लिये तयार हो जाओ, मुसलमान का काम नहीं कि इस्लाम के रास्ते से कतराये और धर्म की माँग को पूरा न करे"।

मूसा अलैहिस्सलाम की बातों का असर सब से ज़्यादा नवजवानों पर हुआ। उन्हों ने कहा "हम को अल्लाह की मदद पर पूरा भरोसा है और हम आप की आज्ञापालन करने के लिये बिल्कुल तयार हैं, और जब हम ने इन हालात में धर्म की सेवा करने के लिये क़दम बढ़ाया है तो अल्लाह तआला से हमारी यही दुआ है कि "ऐ हमारे मालिक! हमें ज़ालिम लोगों के

लिये फ़ितना न बना, बल्कि अपनी रहमत से हम को काफ़िरों से मुक्ति देना"।

उन मुसलमान नवजवानों का हौसला देखिये बड़े बूढ़े मसलेहतों के चक्कर में पड़े हुये हैं तरह-तरह के डर-ख़ौफ़ सामने ला-ला कर उन के बढ़ते हुये क़दमों को पीछे हटा रहे हैं, कभी ख़ानदान की बरबादी का ख़तरा सामने लाते हैं तो कभी अपने बूढ़ापे का वास्ता देते हैं लेकिन अल्लाह के उन बन्दों ने अल्लाह का संदेश सुना है, उस के धर्म की बातें सामने आ चुकी हैं और हर शख़्स को यह फ़ैसला करना पड़ रहा है कि अब हक़ और बातिल की दो मुख़ालिफ़ कुव्वतों में से उसे किस कुव्वत का साथ देना है। उस नाज़ुक मौक़ा पर ईमान वाले हक़ का साथ देने का फ़ैसला करते हैं, और भला वह यह फ़ैसला क्यों न करते? उन के सामने तो कामियाबी और नाकामी के असली पैमाने आ चुके थे वह जानते थे कि कामियाब वह है जिस ने उस सच्चे मालिक को राज़ी कर लिया, और नाकाम वह है जिस ने अपनी दुनिया बनाने के लिये हक़ का साथ देने से मुंह मोड़ा, उस मौक़ा पर वह दुआ करते हैं कि "ऐ मालिक! हमें ज़ालिम लोगों के लिये फ़ितना न बनाना" यह दुआ बड़ी अहम दुआ है इस में बहुत से अर्थ छुपे हुये हैं, उन्हें समझ लीजिये। कुफ़्र और बातिल के ग़लबे के वक़्त जब कुछ लोग

हक़ का झंडा लेकर उठते हैं तो उन्हें तरह-तरह के लोगों से वास्ता पड़ता है कुछ लोग तो खुल कर मुख़ालिफ़त करते हैं और पूरी ताक़त से हक़ बात कहने वालों को कुचल देना चाहते हैं। कुछ लोग उस हक़ की मुख़ालिफ़त खुले तौर से तो नही कर सकते क्योंकि उन्हें ख़ुद यह दावा होता है कि वह भी उस हक़ के मानने वाले हैं लेकिन उन्हें हुकूमत और अधिकार का डर होता है वह अपने आराम में ख़लल डालने के लिये तयार नहीं होते, ज़िन्दगी की गाड़ी जिस रास्ते पर चलती होती है उस से हटना उन्हें मुसीबत नज़र आता है। अपने कारोबार, खेती, नोकरी और घर बार का खुला हुआ नुक़सान उन्हें सामने दिखाई देता है और इस लिये वह कहते हैं कि भाई बात तो ठीक है लेकिन इन कामों का यह वक़्त नहीं है आज कल ऐसी कोशिशें बिल्कुल बेकार हैं इस से कोई नतीजा नहीं निकल सकता, यह तो ख़ुद अपने आप को हलाकत में डालना है, यह लोग पूरी कोशिश करते हैं कि किसी तरह भी हक़ की यह आवाज़ उठने न पाये क्योंकि इस सूरत में उन को दोहरी मुसीबतों का सामना होता है, एक तरफ़ तो उस आराम व सुकून में ख़लल पड़ता है जिस में उन की ज़िन्दगी गुज़र रही होती है, दूसरी तरफ़ जब लोगों के सामने धर्म की बातें आती हैं तो फिर वह आगे बढ़ कर ख़ुद

उन से माँग शुरू कर देते हैं कि हज़रत! धर्म तो यह बात कहता है फिर आप जैसें धार्मिक इस से अलग क्यों हैं? इस लिये यह गिरोह पूरी ताक़त के साथ हर उस तहरीक (आंदोलन) का मुख़ालिफ़ हो जाता है जो धर्म को ऊँचा करने के लिये उठे।

ऐसे ही मौक़ा पर मूसा अलैहिस्सलाम के साथियों ने दुआ माँगी कि "ऐ अल्लाह! हम पर अपना फ़ज़्ल फ़रमा, और हमें हर नाकामी और कमी से सुरक्षित रख क्योंकि इन हालात में कहीं ऐसा न हो कि हमारी नाकामी या हमारी कमी से हक़ की दावत को कोई नुक़सान पहुंचे और लोग हमारी हालत को देख कर तेरे धर्म की तरफ़ बढ़ने के बदले पीछे हटने लगें।

दावत के साथ-साथ मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल और दूसरे मोमिनीन की तर्बियत (शिक्षा) का भी इन्तिज़ाम फ़रमाया ऐसा मालूम होता है कि उस वक़्त फ़िरऔन की हुकूमत ने उन मुसलमानों को इतनी आज़ादी भी नहीं दी थी कि यह खुल कर नमाज़ जमाअत के साथ अदा कर सकते। इन हालात में नमाज़ क़ायम करने और मोमिनीन को तर्बियत (शिक्षा) देने के लिये अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम और उन के भाई को यह हिदायत फ़रमाई कि तुम शह्र में कुछ मकानों को ख़ास कर लो और सब लोग मिल कर यहाँ नमाज़ क़ायम करो,

मोमिनीन के दिलों से मायूसी, डर और कमज़ोरी दूर कर के उन के हौसले बढ़ाओ और उन में इस यक़ीन को ताज़ा करो कि कामियाबी असल में उन्हीं के लिये है।

इस्लाम जिस काम के लिये लोगों को तयार करना चाहता है उस की तर्बियत के लिये ईमान के सही होने और उस के बाद नमाज़ के क़ायम करने पर ज़ोर देता है, कोई गिरोह जो नमाज़ क़ायम करने की पाबन्दी न करे वह चाहे और कोई काम कर ले लेकिन धर्म का काम नहीं कर सकता धर्म की ख़िदमत वही लोग कर सकेंगे जो नमाज़ क़ायम[1] करने का हक़ अदा कर सकें।

---

1. नमाज़ क़ायम करने का मतलब यह है कि नमाज़ उस तरह अदा की जाये जिस तरह अदा करने का हक़ है इस में यह बातें शामिल हैं-

i. नमाज़ सोच समझ कर ख़ूब आजिज़ी और दिल से अदा की जाये।

ii. वक़्त की पाबन्दी के साथ जमाअत से अदा की जाये।

iii. ठहर-ठहर कर बहुत ही इतमीनान व सुकून के साथ नमाज़ के अरकान अदा किये जायें।

iv. नमाज़ के बारे में जो ज़ाहिरी और अन्दरूनी अहकाम, शराइत व आदाब कुरआन व हदीस में मिलते हैं उन की पाबन्दी की जाये।

क़ारून

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल में जो दावत व सुधार का काम किया उस के नतीजे में जहाँ बहुत से लोगों की ज़िन्दगियों का रंग ही पलट गया. वहाँ ऐसे बदनसीब भी बाक़ी रह गये जिन्हों ने इस हिदायत से कोई फ़ायदा नहीं उठाया बल्कि वह अपनी गुमराही में और ज़्यादा सख़्त हो गये ऐसे ही लोगों में क़ारून भी था क़ारून हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम से था।

क़ारून की गुमराही की असल वजह उस की दौलत थी वह बनी इस्राईल में धन दौलत का पुजारी था अल्लाह तआला ने उसे बहुत दौलत दे रखी थी लेकिन वह इस इम्तिहान में नाकाम हुआ, दौलत पा कर आपे से बाहर हो गया घमंड करने लगा और अपनी दौलत के बल पर कमज़ोरों को सताने लगा। अल्लाह तआला ने उसे इतनी दौलत दी थी कि कई आदमी मिल कर भी उस के ख़ज़ानों की कुंजियाँ उठा नहीं सकते थे।

क़ारून के पास दौलत होने की वजह से फ़िरऔन के दरबार में भी उस की इज़्ज़त थी लेकिन अपनी इस इज़्ज़त की बिना पर वह अपनी क़ौम के लोगों के लिये और ज़्यादा मुसीबत का सबब बन गया था

अपना नाम पैदा करने के लिये और सरकारी कर्मचारियों को ख़ुश करने के लिये वह अपनी ही क़ौम का गला कटवाता था और इस तरह ख़ूब अपना उल्लू सीधा करता था इन्हीं हथकंडों की बिना पर उस ने इतनी दौलत जमा कर ली थी।

एक बार क़ौम के लोगों ने उसे ख़ुदा से डराया और उस से कहा "देख! इतना घमंड न कर अल्लाह तआला घमंड करने वालों को पसंद नहीं करता, तुझे चाहिये कि अल्लाह तआला ने जो कुछ तुझे दिया है उस की मदद से तू अपनी आख़िरत के लिये तोशा (सामान) जमा कर।" ग़रीबों के काम आ, बेकसों की मदद कर, इस दौलत को ख़र्च करने के लिये यही सही जगह है। इस का मतलब यह नहीं है कि तू सब कुछ अल्लाह की राह में लुटा दे, अपने हिस्से की दौलत को ख़र्च कर के अपने लिये भी आराम व सुख का इन्तिज़ाम कर, लेकिन जिस तरह अल्लाह तआला ने तुझे दौलत अता फ़रमा कर तुझ पर एहसान किया है उसी तरह तू भी उस के कमज़ोर बन्दों पर एहसान कर, दौलत को इस तरह जमा कर के रखना, और ज़्यादा से ज़्यादा दौलत हासिल करने के लिये जाइज़ और नाजाइज़ का ख़याल किये बग़ैर दूसरों पर ज़ुल्म कर के दौलत इकट्ठा करना असल में दुनिया में फ़साद का सब से बड़ा सबब है, तू इस फ़साद से बच,

अल्लाह तआला ऐसे फ़सादी लोगों को पसंद नहीं फ़रमाता जो दूसरों पर ज़ुल्म करते हैं और उन का हक़ मार कर दुनिया की शान्ति बरबाद करते हैं"।

कितनी सीधी और साफ़ थीं यह बातें, लेकिन उन के जवाब में वही कहा जो आज भी उस जैसे फ़साद फैलाने वाले कहा करते हैं, बोला "यह माल व दौलत तो मैं ने अपने हुनर और अपनी होशयारी की बदौलत जमा की है, इस में किसी का क्या हक़ है जो मैं अपनी गाढ़े पसीने की कमाई इन भूकों और नंगों में लुटा दूँ ?"

सच है जिस की आँखें बन्द हों, जो असल देने वाले को भूला हुआ हो, जो अपने से पहले गुज़रे हुये लोगों की तारीख़ से सबक़ न ले उस के दिल से दौलत की मुहब्बत निकाल देना कोई आसान काम नहीं, काश क़ारून की आँखें खुली होतीं और वह देखता कि उस से पहले कैसे-कैसे ताक़तवर हलाक हो चुके हैं, और आज उन के अफ़सानों के सिवा कुछ भी बाक़ी नहीं है यह हाल तो दुनिया का है, आख़िरत में तो उन के लिये और भी तबाही है, उस दिन तो उन के काम इतने ज़ाहिर होंगे और उन का रुवाँ-रुवाँ उन के बुरे कर्मों का हाल सुना रहा होगा, कि उन से पूछने की ज़रूरत भी न होगी।

मालदारी के ऐश व आराम में बड़ा धोका है जो

शख़्स इस लानत में फंसा होता है लोग उस के बारे में यह सोच भी नहीं सकते कि वह बरबादी की तरफ़ जा रहा है वह समझते हैं कि यह तो सच मुच बड़े आराम में है कामियाबी उस का हिस्सा है ख़ुशनसीबी उस के क़दम चूम रही है हालाँकि असल मुआमला कुछ और ही होता है यही हाल क़ारून का था। एक बार जब वह अपनी पूरी शान-व-शौकत के साथ अपनी बिरादरी के सामने निकला, तो वह लोग जिन के सामने निकला तो वह लोग जिन के सामने इस दुनियावी ज़िन्दगी की पूरी हक़ीक़त ज़ाहिर न थी धोके में आ गये यह लोग दुनियावी ज़िन्दगी से बहुत प्यार करते थे उन्हों ने क़ारून की हालत पर रश्क किया कहने लगे "काश हमें भी यही सब कुछ मिल जाता जो क़ारून को मिला हुआ है देखो तो यह कैसा ख़ुशनसीब है?" लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे जिन की निगाहों के सामने हक़ीक़त ज़ाहिर थी वह जानते थे कि असल ज़िन्दगी कौन सी है, सच्ची कामियाबी किसे कहते हैं वह जानते थे कि दुनिया में बहुत ज़्यादा माल व दौलत का मिल जाना एक इम्तिहान है और वह यह जानते थे कि क़ारून इस इम्तिहान में बुरी तरह से नाकाम हो रहा है उन लोगों के कान में जब उन बेवक़ूफ़ों की बात पड़ी तो उन्हें बड़ा दुख हुआ, कहने लगे "बड़ा अफ़सोस है तुम्हारे ऊपर कि इतना भी नहीं

जानते कि अल्लाह का सवाब उस दौलत से बहुत बेहतर है जिस पर तुम रश्क कर रहे हो, यह सवाब उन लोगों के लिये सुरक्षित है जो ईमान वाले हैं और जो अपने साथ अच्छे कर्म लेकर जायेंगे। लेकिन यह सवाब उन्हीं लोगों का हिस्सा है जो हक़ के रास्ते में साबित क़दम रहें, अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात को रोकें और ग़रीबी हो या अमीरी हर हाल में अल्लाह का अज्ञापालन करते रहें।"

क़ारून अपने हाल में मस्त रहा किसी के समझाने का उस पर कोई असर न हुआ, और आख़िरकार जब उस का वक़्त पूरा हो गया तो अल्लाह के अज़ाब ने उसे आ दबोचा ज़मीन फटी और वह अपने महल के साथ उस में समा गया, न दौलत रही और न शान व शौकत, सारे उबाली मवाली और ख़ुशामदी देखते के देखते रह गये अल्लाह के मुक़ाबले में कोई काम न आया और कहीं से कोई मदद न मिली।

सुब्ह हुई तो सब ने देखा कि जिस जगह क़ारून का महल था वहाँ अब कुछ न रह गया था, न क़ारून था न उस की दौलत, सब कुछ ज़मीन में धंस चुका था, अब तो जो लोग ख़ुद क़ारून बनने की तमन्ना किया करते थे उन की आँखें भी खुल गईं, पूरी बात उन की समझ में आ गई, कहने लगे "ठीक है यह अल्लाह की इच्छा है जिसे चाहता है धनी बना देता है

और जिसे चाहता है निर्धन कर देता है अल्लाह ने हम पर बड़ा एहसान फ़रमाया कि हमें क़ारून जैसा न बनाया वरना आज हमारा भी यही हाल होता और हम भी क़ारून की तरह ज़मीन में धंसा दिये जाते, हाये अफ़सोस! नाशुक्रे लोग कभी कामियाब नहीं होते।"

कामियाबी असल में आख़िरत की कामियाबी है, वहाँ न फ़िरऔन जैसी हुकूमत काम आयेगी और न क़ारून जैसी दौलत, आख़िरत की कामियाबी उन ख़ुशनसीबों का हिस्सा है जो न तो ज़मीन में सरकशी कर के फ़िरऔन बन बैठते हैं और न क़ारून बन कर फ़साद फैलाते हैं। आख़िरत अल्लाह से डरने वालों के लिये है जो हमेशा अल्लाह से डरते रहते हैं और कोई काम ऐसा नहीं करते जो उस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो।

फ़िरऔन के दरबार के एक नवमुस्लिम

फ़िरऔन ने बनी इस्राईल के बेटों को क़त्ल करने की जो साज़िश चलाई वह भी उस के ग़ुस्से को ठंडा न कर सकी जो मूसा अलैहिस्सलाम की दावत के बढ़ते हुये असरात को देख कर उस के दिल में पैदा हो रहा था, फ़िरऔन ने मूसा अलैहिस्सलाम और उस के साथियों को हर तरह की धमकियाँ दीं, क़त्ल और

क़ैदख़ाने से डराया उन की क़ौम के लोगों पर बेगार सख़्त कर दी और उन की कड़ी निगरानी की जाने लगी, लेकिन मूसा अलैहिस्सलाम की बात ऐसी सच्ची और सीधी थी कि वह दिलों में असर करती ही थी, और फिर अब तो चमत्कारों के खुल कर सामने आ जाने और फ़िरऔन के जादूगरों के हार जाने के बाद बहुत से लोग यह सोचने पर मजबूर हो गये थे कि वास्तव में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के पीछे कोई ख़ुदाई ताक़त है और वह जो कहते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ तो उन्हें आसानी के साथ झूटा नहीं कहा जा सकता, फिर मूसा अलैहिस्सलाम की दावत के प्रभाव सिर्फ़ बनी इस्राईल पर ही नहीं पड़े थे बल्कि ख़ुद फ़िरऔन की क़ौम के लोग भी उस से प्रभावित हो रहे थे और मूसा अलैहिस्सलाम के हमदर्दों की संख्या दिन बदिन बढ़ती जा रही थी। इस नये आंदोलन से प्रभावित और मूसा अलैहिस्सलाम के हमदर्दों की बढ़ती हुई संख्या देख कर फ़िरऔन बौखला गया, और उस ने फ़ैसला कर लिया कि अब मूसा अलैहिस्सलाम को मौत की सज़ा देने के अलावा और कोई रास्ता नहीं, उस की झुंझलाहट का अंदाज़ा कुरआन पाक के इन शब्दों से लगाइये, बोला!

"मुझे छोड़ दो कि मूसा को क़त्ल कर डालूँ और अब वह बुला ले अपने रब को कि वह आकर उसे

बचा ले (अगर उसे क़त्ल न किया गया) तो मुझे डर है कि वह तुम्हारी पूरी ज़िन्दगी को बदल कर रख देगा या फिर मुल्क में बहुत बड़ा फ़साद मचायेगा।”

मूसा अलैहिस्सलाम को भी फ़िरऔन के इस फ़ैसले की ख़बर हुई आप ने फ़रमाया “इस से क्या होता है मैं तो उन तमाम घमंडियों के मुक़ाबले में जिन को आख़िरत की जवाबदही का यक़ीन नहीं है अपने आप को उस आक़ा व मालिक की पनाह में दे चुका हूँ जो मेरा ही नहीं तुम्हारा भी हाकिम व मालिक है।”

जिस को यक़ीन हो कि मौत और ज़िन्दगी सिर्फ़ ख़ुदा के हाथ में है जिस का दिल संतुष्ट हो कि वह जो कुछ कर रहा है सिर्फ़ अल्लाह को प्रसन्न करने के लिये कर रहा है और जिस का ईमान हो कि अल्लाह सब ताक़तवरों के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा ताक़त वाला है वह जो कुछ फ़ैसला फ़रमायेगा वही होकर रहेगा उस के फ़ैसलों को कोई टाल नहीं सकता, वह भला फाँसी और मौत के फ़ैसलों को सुन कर क्या डरेगा, चुनाचे मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन के इस इरादे को कोई अहमियत न दी।

अब उधर की सुनिये! फ़िरऔन ने जब अपना यह फ़ैसला अपने दरबारियों के सामने मशवरे के लिये रखा तो वहाँ एक साहब ने उठ कर अजीब अंदाज़ में उस फ़ैसले के ख़िलाफ़ बोलना शुरू कर दिया, यह

साहब थे तो फ़िरऔन ही की क़ौम के आदमी, लेकिन मूसा अलैहिस्सलाम की दावत पर ईमान ला चुके थे लेकिन अब तक फ़िरऔन या उस के दरबारियों में से किसी को मालूम न था कि यह मुसलमान हो चुके हैं उन्हों ने जब यह सुना कि फ़िरऔन का इरादा मूसा (अलै०) को क़त्ल कर डालने का है और कुछ दरबारी भी उसे यही राय दे रहे हैं तो अब उन से न रहा गया उन्हों ने जान पर खेल कर भरे दरबार में फ़रमाया "क्या तुम एक ऐसे शख़्स को मौत की सज़ा देना चाहते हो जिस का कुसूर इस के अलावा और कुछ नहीं है कि वह यह कहता है कि मेरा हाकिम और आक़ा अल्लाह है, फिर वह जो बात कहता है उस के लिये उस के पास खुली-खुली दलीलें भी हैं उस ने तुम को ऐसी निशानियाँ दिखा दी हैं जो तुम्हारे रब की तरफ़ से दी गई हैं।

तुम्हें सोचना चाहिये कि इस सूरतेहाल के दो ही पहलू हो सकते हैं, या तो उस का दावा झूटा है कि "वह अल्लाह का रसूल है" और जो कुछ कह रहा है अल्लाह की तरफ़ से कह रहा है अगर ऐसा है तो फिर तुम पर उस का असर नहीं पड़ेगा। वह यूँ ही कह-कह कर बैठ रहेगा और आज नहीं तो कल उस की पोल खुल जायेगी लेकिन सोचने के लायक़ बात यह है कि अगर वह सच्चा है तो उस के मार डालने

से कोई काम न बनेगा, तुम्हारे सामने अल्लाह की हिदायत आ चुकी है अब तुम्हारी क़िस्मत का फ़ैसला इस पर नहीं है कि तुम उस हिदायत को पहचानने वाले को ज़िन्दा छोड़ते हो या मार डालते हो बल्कि इस पर है कि तुम उस के बताये हुये रास्ते को कुबूल करते हो या नहीं।

अगर तुम अल्लाह की नाफ़रमानी पर अड़े रहोगे तो अल्लाह का वह अज़ाब जो उस के नाफ़रमानों पर आता है वह तो तुम पर आकर रहेगा चाहे तुम उस शख़्स को फ़ाँसी पर ही क्यों न लटका दो, याद रखो! अल्लाह तआला कभी किसी ऐसे शख़्स को ज़िन्दगी के कामियाब और सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ नहीं देता है जो बन्दगी की हद से गुज़रने वाला हो या झूटा हो।

भाईयो! यह ठीक है कि आज तुम्हारा राज है हुकूमत तुम्हारे हाथ में है, मुल्क में तुम को ग़लबा हासिल है, तुम जो चाहो कर सकते हो, लेकिन हालात हमेशा एक से नहीं रहते, अल्लाह की ताक़त तुम्हारी ताक़त से कहीं ज़्यादा है अगर तुम्हारे इस ग़लत काम की वजह से तुम पर अल्लाह का अज़ाब आ गया तो फिर उस के मुक़ाबले में तुम्हारी मदद करने वाला कौन है?"

उन हिम्मत वाले बुज़ुर्ग की यह बातें सुन कर दरबार सन्नाटे में आ गया ऐसा मालूम होता है कि यह साहब हुकूमत के कोई बड़े उहदेदार थे इस लिये फ़िरऔन की यह हिम्मत तो न हुई कि उन्हें उन की इस बग़ावत पर तुरन्त गिरिफ़तार करा के जेल भेज देता, हाँ उस ने यह सब कुछ सुन कर यही किया कि "मैं आप लोगों को वही राय देता हूँ जिस को अपने ख़याल में सही समझता हूँ और वही रास्ता बताता हूँ जिस में सब की भलाई है।"

उन बुज़ुर्ग ने फ़िरऔन की बात सुनी अनसुनी कर दी और अपनी तक़रीर का प्रभाव लोगों पर डालने के लिये आगे फ़रमाया-

"भाईयो! आप के इस व्यवहार को देख कर मुझे बड़ा डर है कि कहीं आप लोगों का भी वही हाल न हो जो आप से पहले गुज़रे हुये बहुत से गिरोहों का हो चुका है जैसे नूह, आद, समूद की क़ौम और उन के बाद के आने वाले उन जैसे बहुत से लोग। याद रखिये, अल्लाह तआला तो अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने का इरादा नहीं रखता, मगर यह उन के अपने ही करतूत होते हैं जो उन्हें ले डूबते हैं।

अज़ीज़ो! मैं उस दिन से डर रहा हूँ जब आप पर अल्लाह का कोई अज़ाब टूट पड़े और आप मदद के लिये एक दूसरे को पुकारते हों और डर की वजह से

पीठ फेर कर भागे जा रहे हों, उस दिन आप को अल्लाह की पकड़ से बचाने वाला कोई न होगा और याद रखिये! जब किसी की अपनी ग़लत आदत की वजह से अल्लाह तआला उसे हिदायत से दूर कर देता है तो फिर उसे कोई सीधे रास्ते पर नहीं ला सकता।

आप को याद होगा कि अब से पहले अल्लाह के एक और नबी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम भी यही संदेश ले कर आये थे मगर आप लोगों ने उस वक़्त भी उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और जो कुछ वह पेश फ़रमा रहे थे उस के बारे में शक ही में पड़े हुये थे यहाँ तक कि जब उन की मृत्यु हो गई तो आप लोगों ने इतमीनान का साँस लिया और कहने लगे कि अब अल्लाह तआला अपने किसी रसूल को नहीं भेजेगा मगर यह बात अल्लाह की रहमत से दूर थी कि वह इस मुल्क को अपनी हिदायत से हमेशा के लिये दूर कर देता, चुनाचे उस ने हम पर फिर अपना फ़ज़्ल किया और हिदायत के इस सूरज को फिर भेजा जिस से गुमराही के अंधेरे दूर हों और इस मुल्क के रहने वालों को फिर ज़िन्दगी का सीधा रास्ता मिल जाये। क्या इस नेमत की यही क़द्र होनी चाहिये जो आप लोग कर रहे हैं?। याद रखिये! जब कोई बन्दा बन्दगी की हद से गुज़र जाता है और ईमान व यक़ीन के बदले शक व शुबहे में फंस जाता है तो फिर उसे

सीधा रास्ता कभी नहीं मिलता और वह हमेशा भटकता ही रहता है। ऐसे लोगों की पहचान यह है कि जब उन के सामने अपने रब की बातें आती हैं तो यह बिला वजह कटहुज्जती पर उतर आते हैं और बग़ैर किसी दलील के झगड़े किया करते हैं। उन लोगों की आदत नफ़रत के लायक़ है अल्लाह के नज़दीक भी और ईमान वालों के नज़दीक भी।

सुन लीजिये, यह आदत बहुत बुरी है और यह उन्हीं लोगों का काम है जो अपने घमंड में अंधे हो रहे हों और बग़ावत व सरकशी ने जिन्हें मदहोश कर दिया हो इस आदत को अपनाने का नतीजा इस के अलावा कुछ नहीं होता कि ऐसे लोगों को अल्लाह तआला अपनी हिदायत की रोशनी से दूर कर देता है और उन के दिल हक़ को कुबूल करने के लिये उसी तरह बन्द हो जाते हैं जैसे उन पर अल्लाह ने मुहर लगा दी हो।

फ़िरऔन इस तक़रीर को सुन कर खिसयाना हो गया, और संजीदगी के साथ सोच विचार करने के बदले उन बातों को मज़ाक़ में उड़ाने के लिये अपने एक मशहूर दरबारी हामान से कहने लगा।

"अच्छा हामान साहब! ज़रा एक बहुत ऊँची सी इमारत तो बनवाईये हम उस पर चढ़ कर आसमान तक पहुंचने की कोशिश करेंगे और उन के अल्लाह

मियाँ को झांक कर देखेंगे हम भी तो देखें कोई अल्लाह मियाँ हैं भी या नहीं, हम को तो यक़ीन है कि यह साहब बिल्कुल झूट कह रहे हैं।"

यह हाल था फ़िरऔन का! उस की नज़र में उस की अपनी बदआमालियाँ कितनी हसीन हो गई थीं और सीधे रास्ते पर क़दम बढ़ाने में उस के सामने कैसी-कैसी रूकावटें दीवार बन कर खड़ी हो गई थीं! लेकिन फ़िरऔन की यह सारी चालबाज़ियाँ उस के लिये मुफ़ीद नहीं हो रही थीं, बल्कि उसे तबाही से और ज़्यादा क़रीब ही कर रही थीं। फ़िरऔन के दरबार के उस बुज़ुर्ग मोमिन ने फ़िरऔन की इस नामाकूल बात पर भी कोई ध्यान नहीं दिया बल्कि और ज़्यादा मुहब्बत के साथ वहाँ मौजूद लोगों को मुख़ातिब करते हुये आगे फ़रमाया-

"मेरे भाईयो! आप वही रास्ता अपनाईये जो आप के सामने पेश कर रहा हूँ आप की अपनी भलाई इसी रास्ते में है यही नेकी का रास्ता है। मैं आप को एक और हक़ीक़त की तरफ़ ध्यान दिलाना चाहता हूँ ज़रा सोचिये आख़िर यह ज़िन्दगी कब तक? इस का अंजाम सब जानते हैं यहाँ जो कुछ है मालूम नहीं कब तक है और कब तक आप इस से फ़ायदा उठा सकते हैं। हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी तो वह है जो इस के बाद शुरू होने वाली है हमेशा के लिये ठहरने का नाम

दुनिया नहीं, बल्कि आख़िरत है इस लिये बात बिल्कुल साफ़ है कामियाबी असल में वह कामियाबी है जो उस हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी में हासिल हो जाये इस दुनिया की दौलत, इज़्ज़त, हुकूमत और अधिकार कोई ऐसी चीज़ नहीं कि इन्सान उस के लिये आख़िरत की कामियाबी से बेपरवाह हो जाये और ग़लत रास्ता अपना ले जो कोई बुराई करेगा उसे उस के मुताबिक़ बदला मिल कर रहेगा।

सुन लीजिये आख़िरत की कामियाबी का एक ही रास्ता है जिस किसी ने अमले-सालेह [1] अपनाया, चाहे वह मर्द हो या औरत वही जन्नत में जायेगा, इस शर्त पर कि वह मोमिन [2] भी हो वह जन्नत जहाँ उस को बेहिसाब नेमतें मिलेंगी।

उस मोमिन की यह बातें सुन कर फ़िरऔन और उस के दरबारियों को यक़ीन हो गया कि अब इन्हें डरा धमका कर इस रास्ते से हटाया नहीं जा सकता जिस को उन्हों ने सोच समझ कर अपनाया है। चुनाचे

---

1 .अमले–सालेह, नेक काम, यानी वह सारे काम जो अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ हों, और जो उस की ख़ुशी के लिये किये जायें।

2 .ईमान में अल्लाह पर ईमान, अल्लाह के रसूल पर ईमान, और आख़िरत पर ईमान (उस तरह से जिस तरह अल्लाह के रसूल ने बयान किया) के साथ–साथ उन हक़ीक़तों पर ईमान लाना भी शामिल है जो अल्लाह के रसूल बतायें।

अब उन्हों ने दूसरे उपाय से काम लेना चाहा, उन्हें कोई बड़ी लालच देकर फुसलाना शुरू किया, और समझा बुझा कर काम निकाल लेने की कोशिश की।

मगर जिस के दिल में ईमान बैठ चुका हो उस के क़दम न तो किसी बड़ी से बड़ी मुसीबत में डगमगाते हैं, और न कोई बड़ी से बड़ी लालच उसे अपनी जगह से हटा सकती है चुनाचे उन्हों ने उन लोगों की इस कोशिश के जवाब में यही फ़रमाया।

भाईयो! यह सब कुछ आप क्या फ़रमा रहे हैं ज़रा आप ही फ़ैसला करें कि मैं आप को किस तरफ़ बुला रहा हूँ और आप मुझे कहाँ ले जाना चाहते हैं मैं कामियाबी का रास्ता आप को दिखाना चाहता हूँ और एक हमेशा रहने वाली मुसीबत से आप को मुक्ति दिलाने की कोशिश कर रहा हूँ और आप मुझे तबाही और हमेशा रहने वाली नाकामी की तरफ़ ले जाना चाहते हैं आप की दावत यही है न, कि मैं इस संसार के मालिक का इंकार कर दूँ जो हम सब का हक़ीक़ी आक़ा है और उस की ख़ुदाई में दूसरों को शरीक बना लूँ। उस के साथ-साथ दूसरों की बन्दगी और ग़ुलामी भी अपना लूँ? ज़िन्दगी के कुछ कामों में उस का कहा मानूँ, तो कुछ दूसरे कामों में औरों का कहा मान लूँ, हालाँकि उस का इन्कार करने या उस के साथ दूसरों को शरीक ठहराने के लिये मेरे पास कोई सनद नहीं

है, और मैं आप को किस तरफ़ बुला रहा हूँ? उस ख़ुदा की तरफ़ जिस का अधिकार हर अधिकार से बढ़कर है जिस के सामने हर ख़ुदाई एक फ़रेब है हर ताक़त कम है, वह ख़ुदा जो इतनी ज़बरदस्त कुव्वत के साथ-साथ बहुत बख़्शने वाला और दयालू भी है और जिस के दरबार से हर उस बाग़ी और सरकश को माफ़ीनामा मिल सकता है जो उस की उपासना करने के लिये तयार हो जाये।

अब ज़ाहिर है कि आप लोग मुझे जिस ज़िन्दगी के क़ानून की तरफ़ दावत दे रहे हैं वह न मुझे आख़िरत में कामियाब बना सकता है और न दुनिया में ही मेरे कुछ काम आ सकता है, हक़ीक़त यही है कि आख़िर में हम सब को लौट कर अल्लाह ही के पास जाना है, और उस के सरकशों का ठिकाना जहन्नम के अलावा और क्या है, बहरहाल मुझे जो कुछ कहना था मैं ने साफ़-साफ़ कह दिया। वह वक़्त जल्द ही आयेगा जब आप लोग मेरी इन बातों को याद करेंगे और सोचेंगे कि मैं ने आप से क्या कहा था।

रह गया मेरा मुआमला तो जो आप का जी चाहे करें, मैं तो अपने तमाम मुआमलात अल्लाह को सौंपता हूँ मेरा ईमान है कि अल्लाह तआला सब कुछ देख रहा है और वही अपने बन्दों का हक़ीक़ी निगराँ (देख भाल करने वाला) है।”

उन बुज़ुर्ग और हिम्मत वाले मोमिन की बात ख़त्म हो गई, फ़िरऔन और फ़िरऔनियों ने उन के ख़िलाफ़ बहुत सी नापाक कोशिशें कीं, लेकिन जिसे अल्लाह की मदद हासिल हो उस का कोई क्या बिगाड़ सकता है उन लोगों की सारी चालबाज़ियाँ नाकाम हो गईं। उन के बनाये हुये सारे फंदे टूट गये और न सिर्फ़ यह कि अल्लाह तआला ने अपने उस मोमिन बन्दे को उन के हर दावँ से सुरक्षित रखा बल्कि उन की हर चाल उन के अपने ही हक़ में नुक़सानदेह साबित हुई और अपने हर दावं का शिकार वह ख़ुद ही हो गये।

फ़िरऔनियों पर तरह-तरह के अज़ाब आने लगे और इस्लामी दावत के ख़िलाफ़ उन्हों ने जो-जो फंदे तयार किये थे वह ख़ुद ही उन में उलझते चले गये आज हाल यह है कि वह आग जिस में उन्हें दाख़िल होना है हर सुब्ह व शाम उन्हें दिखा दी जाती है, और यही मंज़र (दृश्य) क़यामत के दिन भी उन के सामने होगा, और यह हुक्म उन के कानों में गूँज रहा होगा कि-

"इन सब फ़िरऔनियों को सख़्त से सख़्त अज़ाब में दाख़िल कर दो।"

फ़िरऔनियों पर हल्के-हल्के अज़ाब

ऐसे हिम्मत वाले लोग हर ज़माने में थोड़े ही होते हैं जो वक़्त के आम चलन की परवाह किये बग़ैर उस रास्ते पर चल खड़े हों जिस को उन का ज़मीर हक़ कहता हो, आमतौर पर लोग हर नई बात कुबूल करने से पहले बाप दादा के रस्म-व-रिवाज ख़ानदान के तौर-तरीक़ों को देखा करते हैं यही हाल फ़िरऔनियों का भी था, कुछ गिने चुने लोगों को छोड़ कर बाक़ी लोग यह हिम्मत न कर सके कि मूसा अलैहिस्सलाम की दावत को कुबूल करते और आगे बढ़ कर इस्लामी आंदोलन का साथ देते, अल्लाह के उन नेक बन्दों में से एक साहब का ज़िक्र तो आप पढ़ चुके हैं, जिन्हों ने हर ख़त्रे को भूल कर भरे दरबार में इस्लामी दावत को खुल कर पेश किया। दूसरी नेक हस्ती जिस ने फ़िरऔन की परवाह किये बग़ैर इस्लामी दावत को कुबूल किया ख़ुद फ़िरऔन की बीवी थीं। उन बुज़ुर्ग औरत के ईमान का ज़िक्र करते हुये अल्लाह तआला ने कुरआन पाक में उन मोमिनों के लिये फ़रमाया है। इस बात का अंदाज़ा लगाना कुछ मुश्किल नहीं है कि उन मुहतरम औरत को फ़िरऔन के महलों में रहते हुये ईमान और इस्लाम का रास्ता अपनाना कितना मुश्किल काम होगा, लेकिन जब ईमान की हक़ीक़त खुल कर सामने आ जाये तो फिर

कोई ऐसा शख़्स जिस का ज़मीर बिल्कुल मर न गया हो, अपनी ग़लत जगह पर क़ायम नहीं रह सकता, ख़ासतौर पर जब आख़िरत की हक़ीक़त नज़रों के सामने आ जाये तो फिर यह मुम्किन नहीं कि इन्सान मसलिहतों के लिये ज़मीर का गला घोंटता रहे और डर और ख़ौफ़ की वजह से हक़ का साथ देने से जी चुराता रहे, यही हाल फ़िरऔन की बीवी का था उन्हों ने इस्लाम की दावत को समझा, सुना और क़ुबूल किया। अब उन के लिये सोचने की बात यह थी ही नहीं कि इस का नतीजा क्या होगा, शाही महलों में रहना मुम्किन रहेगा या ग़रीबी और बेचारगी का मुक़ाबला करना होगा। फ़िरऔन उन की इस हिम्मत पर उन्हें ज़िन्दा भी छोड़ेगा या तुरन्त मौत के घाट उतार देगा, उन्हों ने सब आशंकाओं को दिल से निकाल दिया और एक सच्ची मोमिन औरत की तरह अल्लाह तआला से दुआ की कि–

"ऐ मेरे मालिक! मुझे अपने पास जन्नत में एक ठिकाना अता फ़रमा! मुझे फ़िरऔन से निजात दे, और उन कामों से बचा जो फ़िरऔन कराना चाहता है। आक़ा मुझे उस ज़ालिम क़ौम से भी सुरक्षित रख जिस ने तेरी नाफ़रमानी पर कमर बाँध रखी है।"

यह है ईमान की वह कैफ़ियत जो अल्लाह तआला को पसन्द है, मुश्किल हालतों में ईमान का दामन थामे

रहना और सख़्त से सख़्त आज़माईश के मौक़ा पर भी हक़ के रास्ते से न हटना ही मोमिन की असल पहचान है।

इसी तरह कुछ नेक लोगों को छोड़ कर पूरी क़ौम ने हक़ को कुबूल करने से इन्कार कर दिया अल्लाह के नबी को झुटलाया उन के चमत्कार को जादू कहा और आख़िरकार उन के मार डालने तक के उपाय करने लगे।

अल्लाह तआला अपने बन्दों पर मेहरबान है उस की ख़ूबियों में से यह है कि वह दयावान और कृपाशील है। वह नहीं चाहता कि उस के बन्दे ग़लत रास्तों पर चल कर ज़िन्दगी गुज़ारें और अपनी हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी को बरबाद कर लें इसी तरह वह फ़िरऔनियों पर भी मेहरबान था जिन्हों ने शिर्क कर के इन्सानियत को बट्टा लगाया था, जिन्हों ने अल्लाह की हिदायत से मुंह मोड़ कर अपनी पूरी ज़िन्दगी को तबाही और बरबादी के रास्ते पर डाल दिया था पहले उस ने उन नाफ़रमानों की हिदायत का इन्तिज़ाम फ़रमाया। अपने रसूल हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिमस्सलाम को उन के पास भेजा। लेकिन जब उन की मदहोशी ने उन की आँखें बन्द रखीं और उन की ग़फ़लत ने उन के कानों को बहरा बना दिया तो अल्लाह तआला ने उन को इस ग़फ़लत से चौंकाने

और उन की आँखें खोलने के लिये एक और इन्तिज़ाम फ़रमाया, उन पर तरह-तरह के छोटे-छोटे अज़ाब आने लगे, कभी सूखा पड़ जाता, कभी फलों की फ़सल मारी जाती, कभी कोई तूफ़ान आ जाता और कभी टिड्डियाँ फ़स्लों का सफ़ाया कर देतीं, और इतना ही नहीं कभी जुयें, छोटी मक्खियाँ, मच्छर या सुरसुरी जैसे हक़ीर कीड़े, कभी मेंडक अपनी ज़्यादती से उन की ज़िन्दगी दूभर कर देते, और एक बार तो यहाँ तक हुआ कि उन पर आसमान से ख़ून बरसा और यह सब कुछ इस लिये होता कि शायद इसी से वह प्रभावित हों और सोचें कि आख़िर यह सब कुछ आप से आप ही हो रहा है या जिन कारणों की वजह से उन्हें यह तकलीफ़ें पहुंच रही हैं उन का सिरा किसी और के हाथ में है? लेकिन जिहालत का बुरा हो उस ने उन्हें कभी इस तरह सोचने का मौक़ा ही नहीं दिया उन्हों ने सोचा तो यह सोचा कि जब हम पर ख़ुशहाली आती है तो हमारी अपनी समझ और कोशिशों की वजह से आती है, लेकिन जो मुसीबतें आती हैं वह सब हज़रत मूसा और उन के साथियों की वजह से आती हैं।

फ़िरऔनियों के लिये यह अज़ाब कुछ इतने ज़्यादा तकलीफ़ देने वाले साबित हुये कि कभी-कभी तो वह घबरा उठते और चूँकि उन का ज़मीर यह गवाही दे

रहा था कि यह सब कुछ उसी मालिक की तरफ़ से है जिस की तरफ़ मूसा अलैहिस्सलाम बुला रहे हैं, इस लिये जब मुसीबत बरदाश्त से बाहर हो जाती तो मूसा अलैहिस्सलाम से कहते कि आप अपने ख़ुदा से हमारे लिये दुआ करें अगर आप की दुआ से हमारी मुसीबत हट गई तो हम ज़रूर आप पर ईमान ले आयेंगे और बनी इस्राईल को भी मौक़ा देंगे कि आप उन्हें अपने साथ ले जायें और अपने ख़ुदा की इबादत के लिये उस के नाम पर जानवरों की कुर्बानी करें, लेकिन जब मुसीबत टल जाती तो फिर अपनी बात से फिर जाते और उसी तरह दुनिया के ऐश व आराम में मस्त हो जाते।

ग़र्ज़ यह कि एक अज़ाब के बाद दूसरा अज़ाब आता रहा जो पहले अज़ाब से कुछ न कुछ सख़्त ही होता था लेकिन फ़िरऔन और फ़िरऔनियों की आदत न बदलना थी न बदली, गुनहगारों और मुजरिमों की आदत हमेशा कुछ एक सी ही रही है। आप ज़रा सोचें तो यही समझ में आयेगा कि यह जो कुछ बयान हो रहा है वह सिर्फ़ कोई इतिहासी क़िस्सा नहीं है बल्कि एक ऐसा आईना है जिस में ख़ुद हमारे ज़माने की तसवीर नज़र आती है, आज भी इन्सानों की आँखें खोलने के लिये एक नहीं सैकड़ों अज़ाब आते रहते हैं। कभी सूखा (आकाल), कभी सैलाब, कभी

ज़लज़ले हैं और कभी तूफ़ान, कभी बीमारियाँ हैं और कभी ऐसे ख़ून ख़राबे कि जिन से इन्सानियत पनाह माँगे, लेकिन आज के मुजरिम भी इन सब के कुछ न कुछ कारण उसी तरह तैय कर लेते हैं कि गोया उन कारणों के पीछे न कोई शुऊर है और न कोई फ़ैसला, बस सब कुछ यूँही आप से आप हो रहा है।

ग़र्ज़ यह कि फ़िरऔनी उसी तरह मूसा अलैहिस्सलाम को झुटलाते रहे और अल्लाह तआला की खुली-खुली निशानियों का मज़ाक़ उड़ाते रहे। यहाँ तक कि मूसा अलैहिस्सलाम को अब इस्लामी दावत का काम करते-करते लगभग 40 साल गुज़र गये और अब अच्छी तरह अंदाज़ा हो गया कि जिन को ईमान लाना था वह ला चुके, और जो बाक़ी रह गये हैं वह अब किसी तरह सीधे रास्ते पर न आयेंगे।

हिजरत और फ़िरऔन का डूबना

हक़ की दावत लेकर उठने वालों को दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादा वह मक़्सद प्यारा होता है जिस को वह सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी और आख़िरत की कामियाबी के लिये अपनाते हैं। उस मक़सद के मुक़ाबले में उन्हें न रिश्तेदारियों की परवाह होती है और न वतन की मुहब्बत। जब वह देखते हैं कि उन का वतन, उन का कारोबार, उन के दोस्त या उन के

रिश्तेदार इस दावत के रास्ते में रूकावट बन रहे हैं तो वह सब को छोड़ छाड़ कर हर उस जगह चले जाने के लिये तयार हो जाते हैं जहाँ उन्हें इस्लाम धर्म के बढ़ने और अल्लाह के धर्म के क़ायम होने की सम्भावना होती है यही हिजरत है। हिजरत सिर्फ़ धर्म के फ़ायदे को सामने रख कर की जाती है। हज़रात अम्बिया अलैहिमुस्सलाम को अल्लाह तआला की तरफ़ से हिदायत मिल जाती है कि अब हिजरत का वक़्त आ गया है, इस लिये अब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कहा गया कि "मेरे बन्दों को रातों रात मुल्क मिस्त्र से निकाल ले जाओ।"

हुआ यह कि एक रात हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिमस्सलाम बनी इस्राईल को साथ लेकर फ़िलस्तीन की तरफ़ चल खड़े हुये। अभी कुछ दूर ही गये होंगे कि फ़िरऔन के लोगों को पता लग गया कि बनी इस्राईल शहर छोड़ कर चले गये, तुरन्त फ़िरऔन को ख़बर दी गई वह सुन कर बहुत ग़ुस्से में आ गया शहरों-शहरों अपने आदमी दौड़ा दिये। कहने लगा कि "हैं तो यह मुट्ठी भर लोग, मगर उन्हों ने अपनी हरकतों से हमें बहुत ज़्यादा क्रोधित कर दिया है उन की हिम्मतें अब इतनी बढ़ गई हैं कि अब तो हमें उन से एक क़िस्म का ख़तरा महसूस होने लगा है"।

फ़िरऔन ने अपनी पूरी फ़ौज को तयारी का हुक्म

दे दिया और बनी इस्राईल का पीछा करने के लिये ख़ुद चल दिया। फ़िरऔन को इतमीनान होगा कि भला यह निहत्ते ग़ुलाम लोग भाग कर कहाँ जा सकते हैं अभी उन को पकड़ लिया जायेगा लेकिन वहाँ अल्लाह तआला को कुछ और ही मंज़ूर था, कौन जानता था कि इस तरह फ़िरऔन और उस के साथी अपने महलों और बाग़ों को छोड़ कर और अपने ख़ज़ानों और ऐश व आराम को छोड़ कर मौत की तरफ़ क़दम बढ़ा रहे हैं।

सूरज निकलते निकलते यह भारी फ़ौज बनी इस्राईल का पीछा करने के लिये निकल गई, और जब मूसा (अलै०) और उन के साथी ऐसी जगह पर पहुंचे जहाँ उन्हें आगे जाने के लिये बहूरे कुलज़ुम के उत्तर में समुंद्र के एक तंग हिस्से को पार करना था, तो पीछे से फ़िरऔन का लशकर भी आता दिखाई दिया, अब तो मूसा अलैहिस्सलाम के साथी घबरा उठे, सामने समुंद्र पीछे दुश्मन की ताक़तवर फ़ौज, बोले "अब तो हम पकड़े गये अब क्या होगा ?"

ऐसे ही मौक़े होते हैं जब अल्लाह तआला पर ईमान और उस की ज़ात पर मुकम्मल भरोसा मोमिन की हिम्मत बंधाता है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने लोगों की हिम्मत बंधाई और फ़रमाया "नहीं, हरगिज़ नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, मेरा रब मेरे साथ है वह

अभी कोई रास्ता निकालेगा।" उधर अल्लाह तआला ने मूसा (अलै०) को हिदायत फ़रमाई कि "आगे बढ़ो और समुन्द्र पर अपनी लाठी मार दो" लाठी का मारना था कि लाठी का एक नया चमत्कार सामने था, समुन्द्र का पानी दो हिस्सों में इस तरह फट गया कि बीच में एक साफ़ रास्ता निकल आया और उस के दोनों तरफ़ पानी इस तरह रूक कर खड़ा हो गया जैसे कोई पहाड़ खड़ा हो। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अपने साथियों को लेकर उसी रास्ते से समुन्द्र में उतर पड़े और जब तक फ़िरऔन का लशकर पहुंचा यह लोग पार भी हो गये अब जो फ़िरऔन ने देखा कि शिकार बस से बाहर हो गया तो बेताब हो गया और बग़ैर कुछ ज़्यादा सोचे समझे उसी रास्ते पर घोड़े दौड़ा दिये जिस से अभी-अभी बनी इस्राईल समुन्द्र पार हुये थे।

जब फ़िरऔन और उस की फ़ौज पूरी तरह से समुन्द्र में उतर गई तो अल्लाह तआला के हुक्म से पानी के दोनों हिस्से फिर मिल गये और थोड़ी ही देर में फ़िरऔन और उस के साथियों की लाशें पानी के ऊपर तैरने लगीं।

जब फ़िरऔन डूबने लगा और उस ने देख लिया कि वह बिल्कुल मौत के मुंह में है और उसे डूबने से बचाने के लिये न उस की फ़ौज कोई मदद कर सकती है और न उस की ख़ुदाई कुछ काम आ सकती है तो

चिल्ला उठा कि–

"मैं ईमान लाता हूँ उस ख़ुदा पर जिस के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वही ख़ुदा जिस को बनी इस्राईल ने अपना माबूद और आक़ा माना है और अब मैं भी उसी के मानने वालों में शामिल होता हूँ।"

लेकिन ज़ाहिर है कि मौत की निशानियाँ ज़ाहिर होने के बाद ईमान लाने का कोई वक़्त बाक़ी नहीं रहता। इन्सान का इम्तिहान उसी वक़्त तक है जब तक उस का इख़्तियार बाक़ी है, चुनाचे फ़िरऔन के जवाब में कह दिया गया कि–

"अब ईमान लाया, हालाँकि इस से पहले बराबर नाफ़रमानी करता रहा और तू बहुत ही फ़सादी था।"

फ़िरऔन डूब गया। उस के साथी समुन्द्र की मछलियों की ख़ुराक बन गये। लेकिन अल्लाह तआला ने फ़िरऔन की लाश को सुरक्षित रखा, यह एक किनारे आ लगी ताकि लोग देखें और नसीहत हासिल करें वही फ़िरऔन जो अपनी ताक़त के बल पर अल्लाह के रसूल का मज़ाक़ उड़ाता था अल्लाह के दीन की दावत को ठुकरा चुका था और जिस ने लाखों इंसानों को मजबूर कर दिया था कि वह उस के आगे सिर झुकायें और उस की चाहत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें आज किस बेबसी की हालत में पड़ा हुआ था।

कहा जाता है कि उस फ़िरऔन की लाश आज तक मिस्र के अजाइबख़ानों में मौजूद है। और उस पर नमक की एक तह चढ़ी हुई है।

फ़िरऔन से निजात (मुक्ति) पाने के बाद बनी इस्राईल की हालत

फ़िरऔन डूब गया। बनी इस्राईल को उस के अज़ाब से मुक्ति मिल गई। उन्हों ने अपने दुश्मन की तबाही अपनी आँखों से देख ली, अब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उन सब को अपने साथ ले कर फ़िलस्तीन की तरफ़ बढ़े। रास्ते में "सीना" की वादियों (घाटी) से गुज़र हुआ, यहाँ एक ऐसी क़ौम रहती थी जो मूर्तियों की पूजा करती थी, जगह-जगह मन्दिर बने हुये थे, ख़ूबसूरत मूर्तियाँ रखी हुई थीं, पंडित और पुजारी उन के सामने गर्दनें झुकाये हुये बैठे थे, बनी इस्राल ने यह मंज़र (दृश्य) देखा तो कुछ लोग मूसा अलैहिस्सलाम से कहने लगे "हमारे लिये भी कुछ ऐसे ही माबूद (पूजित) बनवा दीजिये जैसे इन लोगों के हैं।"

देखा आप ने! बनी इस्राईल नबियों की औलाद थे तौहीद और इस्लाम उन के बाप दादा का धर्म था लेकिन एक मुद्दत तक मुशरिकों की ग़ुलामी में रहते रहते उन के दिलों में मूर्ति पूजा की इज़्ज़त बैठ गई

थी, और अब वह अपने नबी से प्रार्थना कर रहे थे कि हमारे लिये भी कुछ अच्छी अच्छी मूर्तियाँ बनवा दी जायें, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को यह सुन कर बहुत अफ़सोस हुआ, फ़रमाने लगे "तुम बड़े ही जाहिल हो, जिन लोगों को देख कर तुम ऐसा कह रहे हो वह तो ख़ुद तबाही का शिकार हो रहे हैं और जो कुछ कर रहे हैं वह बिल्कुल ग़लत है। ज़रा सोचो तो सही कि अल्लाह तआला ने तो तुम को तौहीद और इस्लाम की रौशनी दी, तुम्हें इस काम के लिये चुना कि तुम उस के धर्म को फैलाओ और इस तरह वह तुम को पूरे संसार पर इज़्ज़त दे, और तुम चाहते हो कि मैं अल्लाह के अलावा तुम्हारे लिये किसी और को माबूद बना कर पेश करूँ।"

इंसान को अल्लाह तआला ने अपनी तमाम मानवजाति से उत्तम बनाया है, उसे इस ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि) बना कर भेजा है ज़मीन के सारे जानदारों को उस की सेवा पर लगा दिया है अब इस इज़्ज़त के बाद इन्सान की बदनसीबी भला इस से ज़्यादा और क्या हो सकती है कि वह पत्थरों के आगे सज्दे करे, पेड़ों, दरियाओं, जानवरों और पहाड़ों की पूजा करने लगे और अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये अल्लाह को छोड़ कर उस की मानवजाति के सामने हाथ फैलाने लगे।

बनी इस्राईल आगे बढ़े जिस मैदान से यह गुज़र रहे थे वहाँ न पीने के लिये पानी था और न खाने के लिये कोई चीज़, अल्लाह तआला ने अपनी ख़ास रहमत से उन के लिये पानी और खाने का इन्तिज़ाम किया। अल्लाह के हुक्म से मूसा अलैहिस्सलाम ने पहाड़ की एक चटान पर लाठी मारी तो बारह सोते फूट निकले, क़ौम के बारह ख़ानदानों में से हर एक के लिये एक सोता ख़ास कर दिया गया, दिन को धूप तेज़ होती तो बादल का साया हो जाता, रात को एक गोंद जैसी चीज़ आसमान से बरसती और उन के ख़ेमों पर जम जाती उसे "मन" कहते थे, बड़ी मज़ेदार ग़िज़ा होती थी और बटेर की तरह का एक जानवर जिसे "सलवा" कहते थे, बहुत ज़्यादा मिलता था यह लोग उसे पकड़ते और पका कर खाते, अब खाने के लिये मन और सलवा और पीने के लिये पानी का इन्तिज़ाम था।

एक तरफ़ तो अल्लाह तआला के यह एहसानात थे दूसरी तरफ़ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की संगति और आप की तर्बियत का काम चल रहा था लेकिन अभी तक बनी इस्राईल को कोई शरीअत (धर्ममार्ग) पूरी तरह नहीं मिली थी। अल्लाह तआला का वादा था कि फ़िरऔन के पंजे से मुक्ति मिल जाने के बाद उन्हें "किताब" दी जायेगी। चुनाचे अब हज़रत मूसा

अलैहिस्सलाम ने अपने भाई हारून अलैहिस्सलाम से फ़रमाया "तुम मेरे पीछे मेरी क़ौम में मेरे नाइब (सहायक) की हैसियत से रहना, और हालात को ठीक रखने की कोशिश करते रहना, और देखो ऐसा न करना कि तुम किसी फ़साद फैलाने वाले का कहना मान कर किसी ग़लत रास्ते पर चल पड़ो, मैं तूर पर जाता हूँ अल्लाह तआला का वादा है कि वहाँ मुझे मुकम्मल शरीअत (किताब) दी जायेगी।"

मूसा अलैहिस्सलाम यह हिदायत दे कर चले गये। अब इधर की सुनिये-

मूसा अलैहिस्सलाम के साथ एक शख़्स "सामरी" भी मिस्त्र से आया था यह अभी नया-नया ही मुसलमान हुआ था, ईमान और तौहीद अच्छी तरह उस के दिल में नहीं बैठा था। आप पढ़ चुके हैं कि मिस्त्री लोग गाय की पूजा करते थे। ऐसे मुशरिकों के साथ रहते-रहते बनी इस्राईल के दिलों में भी कुछ न कुछ गाय की इज़्ज़त बैठ गई थी, फिर सामरी तो उसी मुशरिक क़ौम का एक आदमी था। मूसा अलैहिस्सलाम के चले जाने के बाद उसे एक शरारत सूझी उस ने लोगों का सोना चाँदी जमा कर के बछड़े की एक मूर्ति बनाई, बड़ी ख़ूबसूरत मूर्ति बनाई अन्दर से खोखली थी और उस में कुछ ऐसे सुराख़ रखे गये थे कि जब उन में से हवा हो कर गुज़रती तो उस से

एक क़िस्म की आवाज़ भी निकलने लगती अब क्या था लोग उस तमाशे को देखने आने लगे। चीज़ ख़ूबसूरत भी थी और अजीब भी। सामरी के अन्दर दबा हुआ शैतान उभर आया, बोला "जानते भी हो यह क्या है? "यह है ख़ुदा" तुम्हारा भी ख़ुदा और मूसा का भी ख़ुदा।

सामरी की बात तो कुछ ठीक न थी मगर जब दिलों में चोर होता है तो अक़्ल भी मारी जाती है, साफ़ और मोटी बात भी समझ में नहीं आती। चुनाचे उन लोगों का भी यही हाल हुआ भला कहाँ ख़ुदा और कहाँ यह सोने का पुतला, मगर मूर्ति पूजा और गाय की जो इज़्ज़त दिल में बैठी हुई थी उस ने अक़्ल मार दी यह भी न सोचा कि यह बछड़ा न तो नफ़ा पहुंचा सकता है और न नुक़सान। कुछ लोग सामरी के फंदे में फंस गये और बछड़े की पूजा करने लगे।

हज़रत हारून अलैहिस्सलाम ने बहुत समझाया कि "देखो यह बछड़ा असल में तुम्हारे ईमान के लिये एक आज़माइश है, भला यह ख़ुदा कैसे हो सकता है तुम्हारा रब तो ख़ुदाये रहमान है, मेरा कहा मानो और इस काम से रूक जाओ, लेकिन जब इंसान दिल के कहे पर चल पड़ता है और अक़्ल से काम लिये बग़ैर फ़ैसले कर लेता है तो फिर सीधे रास्ते पर वापस आना उस के लिये बहुत मुश्किल हो जाता है। क़ौम

ने सब कुछ सुना, मगर किया वही जिसे उन का दिल चाहता था, बोले "अच्छा जब तक मूसा अलैहिस्सलाम लौट कर आयें उस वक़्त तक हम इस की पूजा करते रहेंगे, जब वह आयेंगे तो देखा जायेगा।"

मूसा अलैहिस्सलाम तूर पर गये तो थे 30 दिन के इरादे से मगर वहाँ उन को 40 दिन लग गये। वहाँ अल्लाह पाक ने उन से बात चीत की और मूसा अलैहिस्सलाम की प्रार्थना पर अपनी थोड़ी सी झलक भी दिखा दी, मूसा अलैहिस्सलाम बरदाश्त न कर सके झलक देखते ही बेहोश हो गये, जब होश आया तो अपनी ग़लती का एहसास हुआ और अल्लाह तआला से अपने ग़लती की माफ़ी चाही।

उस के बाद मूसा अलैहिस्सलाम को "तौरात" दी गई। तौरात तख़्तियों पर लिखी हुई थी, और उस में हर क़िस्म के आदेश और नसीहतें विसतार के साथ लिख दी गई थीं, अल्लाह तआला का फ़रमान हुआ "लो यह तौरात ले जाओ, इस में जो क़ानून बताये गये हैं उसी क़ानून के अनुसार अपनी ज़िन्दगी गुज़ारो और अपनी क़ौम से कहो कि वह भी इस में बताई हुई बातों पर जमे रहें।"

मूसा अलैहिस्सलाम को यह नेमत पा कर कितनी ख़ुशी हुई होगी। एक मोमिन बन्दे के लिये अपने आक़ा और मालिक का आज्ञापालन करना ही ख़ुद

बड़ी ख़ुशी का सबब होती है वह कभी भी उन आदेशों को अपने लिये मुसीबत नहीं ख़याल करता, लेकिन इस ख़ुशी के साथ-साथ वहीं उन्हें दुख पहुंचाने वाली भी एक बात थी, उन्हें यह बताया गया कि आप के पीछे आप की क़ौम तौहीद और ख़ुदा की इबादत करने के इम्तिहान में नाकाम हो गई, उन को सामरी ने गुमराह कर दिया और उन्हों ने बछड़े को ख़ुदा बना लिया यह सुन कर मूसा अलैहिस्सलाम को बड़ा दुख हुआ, और उन्हें क़ौम के लोगों पर बड़ा ग़ुस्सा आया।

जब मूसा अलैहिस्सलाम लोट कर क़ौम के लोगों के पास आये तो उन्हों ने लोगों से कहा, "यह तुम ने क्या किया? क्या तुम्हें यह याद नहीं रहा कि तुम्हारे रब ने तुम से किस-किस भलाई का वादा किया है? क्या कोई बड़ी मुद्दत गुज़र गई थी जो तुम ने यह हरकत शुरू कर दी?"

लोगों ने जवाब दिया "नहीं हम इस वादे को भूले तो नहीं, मगर हुआ यह कि हम ने उन भारी-भारी ज़ेवरों को उतार डाला जो मिस्र में पहने जाते थे सामरी ने उन्हें ले लिया, और उन को गला कर एक बछड़ा बना डाला, बछड़ा कुछ बोलता भी था और उस ने कहा कि लो यह ख़ुदा है तुम्हारा भी ख़ुदा और मूसा (अलै०) का भी ख़ुदा हम से भूल हो गई और हम ने उस की पूजा शुरू कर दी।"

अब मूसा अलैहिस्सलाम अपने भाई हारून अलैहिस्सलाम की तरफ़ मुतवज्जे हुये और ग़ुस्से में उन के बाल पकड़ कर बोले "हारून तुम ने भी उन्हें नहीं रोका? क्या तुम ने मेरे हुक्म की परवाह नहीं की? और उन्हें गुमराह होते हुये देखते रहे, हज़रत हारून ने फ़रमाया "नहीं, मेरी मान जाइये भाई! आप मेरे बाल और मेरी दाढ़ी पकड़ कर दुश्मनों को मुझ पर हंसने का मौक़ा न दीजिये, बात यह नहीं है मैं ने उन्हें बहुत रोका और समझाया, लेकिन मेरी उन्हों ने एक न सुनी और मुझे मार डालने की कोशिश करने लगे, मुझे अगरचे अपनी जान की परवाह न थी लेकिन मैं ने इस मुआमले में बहुत ज़्यादा सख़्ती इस लिये नहीं की कि मुझे यह ख़याल हुआ कि कहीं आप यह न कहें कि तुम ने तो बनी इस्राईल में फूट डलवा दी, और मेरे हुक्म का इन्तिज़ार भी न किया, कुछ दिनों की बात ही थी, मैं आप की वापसी का इन्तिज़ार करने लगा अब कम से कम मुझे तो इन गुनहगारों का साथी ख़याल न करें।

बात साफ़ थी, मूसा अलैहिस्सलाम समझ गये आप ने अपने और अपने भाई के लिये अल्लाह तआला से ग़लती की माफ़ी चाही, और सामरी से पूछा "कहो तुम्हें यह क्या सूझी थी?" सामरी ने जान बचाने के लिये झट से एक बात बनाई और अपनी

शरारत को अच्छा बताते हुये बोला "मैं ने उस चीज़ को देखा जिस को और लोगों ने नहीं देखा, जब फ़िरऔन की फ़ौज चढ़ी चली आ रही थी तो मैं ने हज़रत जिबरील को देखा कि वह आगे-आगे थे उन के घोड़ों की टाप जिस जगह पड़ती थी वहाँ घास उग जाती थी मैं ने घोड़े के क़दमों की एक मुट्ठी मिट्टी उठा ली, और उस मिट्टी को बछड़ा बनाते वक़्त डाल दिया उस से उस में ज़िन्दगी आ गई और वह बोलने लगा और मेरे दिल ने मुझे कुछ यही बात सुझा दी।"

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने सामरी का यह अफ़साना सुना और तुरन्त ही उस के लिये यह हुक्म दे दिया कि आज से कोई इस से किसी तरह का संबंध न रखे यहाँ तक कि इसे ख़ुद एहसास हो जाये कि वह वास्तव में बिल्कुल अछूत है और आख़िरत में तो उस के लिये अज़ाब मुक़र्रर ही है वह किसी तरह टल नहीं सकता। फिर सामरी से फ़रमाया "रह गया तेरा यह ख़ुदा जिस के पवित्र होने का अफ़साना तूने गढ़ा और जिस की पूजा का ढंग रचा कर तू बैठा था तो देख अभी-अभी इस का क्या हाल होता है यह तेरे सामने फूंका जायेगा और इस को मिट्टी बना कर नदी में फेंक दिया जायेगा।"

फिर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने वहाँ मौजूद लोगों को मुख़ातब कर के फ़रमाया "भाईयो तुम्हारा

आक़ा तो वही है जिस के सिवा कोई दूसरा इबादत के लायक़ नहीं वह, और सिर्फ़ वहीं तुम्हारा अल्लाह है, इस का इल्म सब पर छाया हुआ है भला कहीं इस क़िस्म की चीज़ें तुम्हारा माबूद बन सकती हैं। यह बछड़ा है क्या चीज़? इस में न कोई पवित्रता है और न कोई इज़्ज़त, यह न किसी को नफ़ा पहुंचा सकता है और न नुक़सान हम इसे अभी-अभी जला कर मिट्टी बना देते हैं भला कहीं माबूद की यह शान हो सकती है?"

जब सामरी को यह सज़ा सुना दी गई, तो अब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम क़ौम की तरफ़ मुतवज्जे हुये। आप ने ख़ुदा से उन की ग़लती की माफ़ी की दुआ की, अल्लाह तआला ने आप की दुआ कुबूल फ़रमाई लेकिन यह शर्त रखी कि जिन लोगों ने शिर्क किया है उन को अपने धर्म से फिर जाने के जुर्म में ख़ुद क़ौम वाले ही अपने हाथों क़त्ल कर दें ताकि पूरी क़ौम पर जो कुफ़्र और शिर्क का धब्बा लग गया है वह इस तरह दूर हो सके।

इस हुक्म के अनुसार तुरन्त काम शुरू हो गया यहाँ तक कि बनी इस्राईल की एक बड़ी संख्या मौत के घाट उतर गई। अब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फिर रह्म की प्रार्थना की और जिन लोगों का जुर्म कुछ हल्का था उन की ग़लती माफ़ कर दी गई और

उन्हें ताकीद की गई कि अब कभी शिर्क के क़रीब भी न जाये।

बनी इस्राईल की ज़िन्दगी के कुछ और बिगाड़

ग़ुलामी की ज़िन्दगी इस्लाम को पसन्द नहीं आती। इस्लाम इन्सान को हर तरह की ग़ुलामी से निकाल कर सिर्फ़ एक अल्लाह का बन्दा बनाता है। इसी लिये जब कभी भी मुसलमानों को ग़ुलामी की ज़िन्दगी गुज़ारना पड़ी है उन का संबंध इस्लाम से बराबर कमज़ोर होता चला गया है और फिर काफ़िरों और मुशरिकों की ग़ुलामी के प्रभाव तो और भी ख़तरनाक होते हैं। बहुत सी काफ़िराना बातें और मुशरिकाना ख़यालात आहिस्ता-आहिस्ता दिल में जगह करते रहते हैं कि मोमिन को मालूम ही नहीं होता कि उस के ईमान को क्या घुन लग रहा है, और कुछ ही दिनों के बाद वह बहुत सी बातें इस्लाम के ख़िलाफ़ अपना लेता है यही हाल बनी इस्राईल का भी था। फ़िरऔनियों की ग़ुलामी में रहते-रहते बहुत सी ख़राबियाँ उन में पैदा हो चुकी थीं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अब उन ख़राबियों को दूर करने की तरफ़ ध्यान दिया और बनी इस्राईल के लोगों की आला (उच्च) इस्लामी तालीम (शिक्षा) व तर्बियत का इन्तिज़ाम किया। उन के रोज़ाना के कामों

की देख भाल के लिये मूसा अलैहिस्सलाम ने उन को बारह अलग-अलग गिरोहों में बाँट दिया, और हर गिरोह के लिये एक निगराँ (संरक्षक) मुक़र्रर किया और उसे इस बात का ज़िम्मेदार ठहराया कि जो बात भी इस्लाम के ख़िलाफ़ देखें उस पर उन्हें टोकें, और उन के आपस के संबंध को ठीक रखने के लिये भी मुनासिब चेतावनी देते रहें।

इस बात का अंदाज़ा करने के लिये कि बनी इस्राईल फ़िरऔनियों के साथ रहते-रहते कितने गिर गये थे और मूसा अलैहिस्सलाम को उन के सुधार के लिये क्या कुछ करना पड़ा होगा हम थोड़ा-थोड़ा कर के बनी इस्राईल की कुछ और मोटी-मोटी ख़राबियाँ बताते हैं।

तौरेत मिलने के बाद का क़िस्सा है उन में से कुछ लोगों ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से माँग की कि अल्लाह तआला को हमें दिखा दीजिये, हम ख़ुद अपनी आँखों से देखें कि अल्लाह तआला आप को तौरेत दे रहे हैं और उस में ज़िक्र किये हुये क़ानून के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने का हुक्म दे रहे हैं।

देखा आप ने, अल्लाह की ज़ात का सही ख़याल और उस की सिफ़ात का सही सही इल्म न होने ही की वजह से तो उन लोगों की ज़ुबान पर इतनी बेकार

सी बात आ गई, वह अल्लाह तआला को भी कुछ ऐसा ही समझते होंगे जैसा मिस्री लोग अपने देवताओं को समझते थे।

गाय की इज़्ज़त का कुछ न कुछ ख़याल उन लोगों के दिलों में अभी तक बैठा हुआ था, इसी वजह से उन्हों ने बछड़े की पूजा शुरू कर दी थी, और इस बात की सख़्त ज़रूरत थी कि उन के दिलों से यह चोर निकाला जाये। चुनाचे एक बार अल्लाह तआला के हुक्म से मूसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें हुक्म दिया कि तुम गाय ज़िब्ह करो, लेकिन उन्हों ने इस हुक्म के मानने में तरह-तरह के बहाने बनाने शुरू कर दिये, कभी पूछते गाये कैसी हो? कभी पूछते उस का रंग क्या हो? हालाँकि साफ़ बात थी कि अल्लाह का हुक्म सुनते ही गाय की कुर्बानी के लिये तयार हो जाते और बिला वजह कुरेद न करते। लेकिन जब तक अल्लाह के अहकाम की पूरी अज़मत दिल में बैठी हुई न हो इन्सान इस तरह सवाल किया ही करता है। चुनाचे जब उन के हर तरह के सवाल का जवाब दे दिया गया और साफ़-साफ़ बता दिया गया कि गाय कैसी कैसी होनी चाहिये, तब कहीं मजबूरन उन्हों ने गाये ज़िब्ह की वरना वह क्या ज़िब्ह करते?

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि "जाओ बनी इस्राईल को फ़िलस्तीन ले

जाओ। हमारा वादा है कि यह लोग वहाँ ख़ूब फलें फूलेंगे और हम उन्हें वहाँ हुकूमत और सरदारी देंगे।" चुनाचे मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया-

"भाईयो! तुम्हें मालूम है कि अल्लाह तआला ने हमेशा तुम पर करम की नज़र रखी है, उस ने तुम मे से कुछ को अपना नबी बनाया, और कुछ को हुकूमत और अधिकार दिया और तुम को वह नेमत दी जो दुनिया के और इन्सानों में से किसी को नहीं दी, यानी अपने धर्म को फैलाने की ज़िम्मेदारी, इस लिये अब उस का हुक्म है कि तुम फ़िलस्तीन जाओ और वहाँ अल्लाह के धर्म का प्रचार करो, और देखो! अगर तुम इस फ़र्ज़ से मुंह मोड़ोगे तो बड़ा नुक़सान उठाओगे।

यह सुन कर कुछ लोग तो तयार हो गये और कुछ लोग हिचकिचाने लगे, क़ौम की यह बुज़दिली देख कर उन में से दो बहादुरों नें उस मुल्क में दाख़िल हो जाने के लिये कुछ उपाय भी बताये, और अल्लाह पर भरोसा रखने की हिदायत करते हुये उन्हें यक़ीन दिलाया कि जीत उन्हीं के हिस्से में आयेगी। मगर जो क़ौम ग़ुलामी में सदियों गुज़ार चुकी हो, और अभी जिस की तर्बियत पूरी न हुई हो, उस से क्या उम्मीद की जा सकती थी कि वह जान की बाज़ी लगा कर क़दम आगे बढ़ायेगी। चुनाचे उन कम हिम्मत वालों ने साफ़ इन्कार कर दिया। बोले "साहब हम तो वहाँ

जायेंगे नहीं ऐसा ही है तो आप और आप का रब जायें और फ़िलस्तीन के लोगों से जंग करें, हम तो यहाँ ही बैठे हैं, जब आप लड़ाई जीत लेंगे और शहर से हमारे दुश्मनों को भगा देंगे तो हम भी आ जायेंगे।"

क़ौम के इस जवाब को सुन कर मूसा (अलै०) को बहुत दुख हुआ, आप ने अल्लाह तआला से कहा "ऐ मालिक! अपनी भलाई और अपनी ज़ात के अलावा मेरा बस तो किसी पर चलता नही, अब इस नालायक़ क़ौम के ऊपर इन की नाफ़रमानियों की वजह से जो भी अज़ाब आये उस से तू ही हमें निजात दे" फ़रमाया गया, अभी 40 साल तक उन लोगों को इस पवित्र ज़मीन में प्रवेश करना नसीब न होगा यह यहीं भटकते फिरेंगे।"

यह मुद्दत ऐसी थी कि उस में एक नई नस्ल तयार हो गई। ऐसी नस्ल जिस ने ग़ुलामी और कुफ़्र के माहौल में ज़िन्दगी नहीं गुज़ारी थी बल्कि जिस की परवरिश आज़ाद इस्लामी माहौल में हुई थी, अल्लाह तआला ने अपने धर्म का काम उसी नस्ल से लिया।

यानी कि इसी तरह की बहुत सी ऐसी हरकतें हैं जिन की वजह से मूसा (अलै०) को आये दिन कोई न कोई तकलीफ़ पहुंचती ही रहती थी। लेकिन नबी अपनी उम्मत के लिये रहमत होता है। उम्मत की जो

मुहब्बत नबी के दिल में होती है वह किसी और के दिल में नहीं होती। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम भी अपनी क़ौम की इन तमाम हरकतों को बरदाश्त करते रहे और लगातार उन की तर्बियत और सुधार में लगे रहे।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की इसी तर्बियत का नतीजा था कि वह क़ौम जो सदियों से पीसी जा रही थी और ग़ुलामी और शिर्क के माहौल में रहते-रहते जिस की सलाहियतें (योगयताएँ) ख़त्म सी हो गई थीं उसे दुनिया का इमाम बनाया गया। अल्लाह के भेजे हुये क़ानून को इन्सानों की ज़िन्दगी में लागू करने की ज़िम्मेदारी फिर उसे सौंपी गई, मालूम नहीं अल्लाह के कितने नबी इस क़ौम में पैदा हुये और सदियों तक उन को हुकूमत और अधिकार दिया गया।

हज़रत मूसा की एक नसीहत

हज़रत मूसा (अलै०) के क़िस्से ख़त्म हो रहे हैं, लगभग 120 साल की उम्र तक आप ने नुबुव्वत के फ़राइज़ अंजाम दिये, इस मुद्दत में आप ने मुश्रिकों और काफ़िरों को अल्लाह के धर्म की दावत पहुंचाने, फ़िरऔन जैसे बादशाह से निमटने और बनी इस्राईल जैसी बिगड़ी हुई क़ौम के ईमान को ताज़ा और मज़बूत कर के उस का पूरा सुधार करने के लिये जो कुछ

किया उस को पूरे तौर से तो कहाँ तक बयान किया जा सकता है हाँ उस की कुछ झलक आप के सामने आ चुकी है और आप ने अंदाज़ा लगा लिया होगा कि इस्लामी आंदोलन को लेकर उठने और उस का प्रचार करने के लिये किन-किन कठिनाईयों से गुज़रना पड़ता है, और क्या कुछ झेलना होता है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के क़िस्से में हमारे लिये बहुत सी नसीहतें और सबक़ मौजूद हैं। इस लिये कुरआन पाक में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के क़िस्से बहुत ज़्यादा बयान किये गये हैं।

सूरह इब्राहीम में इन हिदायत का एक हिस्सा ख़ुसूसियत के साथ बयान हुआ है हम चाहते हैं कि उन हिदायत के ख़ुलासे पर ही हम अपनी किताब को ख़त्म कर दें, इस में नसीहतों और शिक्षा का बेहिसाब ख़ज़ाना मौजूद है। "हम ने मूसा अलैहिस्सलाम को अपनी निशानियाँ देकर भेजा कि वह अपनी क़ौम को अंधेरों से निकाल कर उजाले में लायें।" यह अंधेरे क्या थे ? कुफ़्र और शिर्क, अल्लाह तआला की नाफ़रमानी, अल्लाह के अलावा दूसरों की बन्दगी और ग़ुलामी, यानी कि वह तमाम अंधेरे जो इस्लाम से ग़ाफ़िल हो जाने के बाद ज़रूर इन्सान को घेर लेते हैं उन से बनी इस्राईल को निकाला जाये और उन्हें रौशनी में लाया जाये, कैसी रौशनी ? अल्लाह के दीन

की रौशनी, उस की भेजी हुई हिदायत की रौशनी, ऐसी रौशनी जो न सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी के सफ़र में ठोकरें खाने से बचाती है, बल्कि जिस की मदद से वह रास्ता तय होता है जो हमेशा रहने वाली कामियाबी की तरफ़ पहुंचाता है और जिस के बाद इन्सान को उस हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी का हक़ीक़ी चैन और सुकून नसीब हो जाता है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से यह भी कहा गया था कि वह अपनी क़ौम के लोगों के सामने "अय्यामुल्लाह" के वह क़िस्से भी रखें जिन में उन के लिये शिक्षा और नसीहत है। "अय्यामुल्लाह" से मुराद इन्सानी इतिहास के वह वाक़िआत हैं जब अल्लाह तआला ने पिछली क़ौमों को उन के कर्मों के हिसाब से बदला या सज़ा दी, उन वाक़िआत में बड़ी निशानियाँ हैं, शिक्षा और बहुत क़ीमती सबक़ हैं। उन इतिहासी क़िस्सों में ऐसी निशानियाँ मौजूद हैं जिन से एक आदमी तौहीद के हक़ होने का सुबूत भी पा सकता है और उसे उन वाक़िआत में इस बात के भी बहुत से सुबूत मिल सकते हैं कि अच्छे और बुरे लोगों का अंजाम कभी एक जैसा नहीं हो सकता, और अगर वह सोच विचार से काम ले तो वह यह भी जान सकता है कि जिन क़ौमों और जिन लोगों ने ग़लत अक़ीदों पर रहते हुये अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी, और ग़लत ख़यालात के पीछे

चलते रहे उन का आख़िरी अंजाम क्या हुआ। यानी यह कि इन्सानी इतिहास के उन क़िस्सों में बहुत सी नसीहतें मौजूद हैं, लेकिन यह सब उसी शख़्स के लिये फ़ायदेमंद हैं जो सब्र और शुक्र करने वाला हो ज़ाहिर है कि अगर कोई शख़्स उन नेमतों को पहचान कर उन का सही इस्तेमाल ही न करेगा तो वह उन से क्या फ़ायदा उठायेगा, और इस तरह जो कोई अल्लाह तआला के आदेशों के मुक़ाबले में नफ़्स की ख़्वाहिशों को न दबायेगा, और उन के आदेशों पर चलने में जिन मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है उन्हें बरदाश्त करने के लिये तयार न होगा तो उस के लिये शिक्षाएँ और नसीहतें बेकार साबित होंगी।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से फ़रमाया। “भाईयो! अल्लाह के उस एहसान को याद करो जो उस ने तुम पर किया है, उस ने तुम को फ़िरऔन के चंगुल से मुक्ति दिलाई, वह फ़िरऔन जो तुम को सख़्त तकलीफ़ें देता था, तुम्हारे लड़कों को मार डालता था और तुम्हारी औरतों को बेगार के लिये ज़िन्दा रहने देता था असल में इन सब वाक़िआत में तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी एक बहुत बड़ी आज़माइश थी। अब जबकि उस ने तुम को अम्न व शान्ति अता फ़रमाई, तरह-तरह की नेमतें दीं, और तुम्हें अपनी हिदायत से नवाज़ा, तो तुम्हारा फ़र्ज़ है

कि तुम उस का शुक्र अदा करो, ज़ुबान से भी और अपने कर्म से भी। तुम्हें याद रखना चाहिये कि तुम्हारे रब ने साफ़ फ़रमा दिया है कि "अगर तुम उन नेमतों का शुक्र अदा करोगे तो हम और ज़्यादा नेमतें देंगे, और अगर नाशुक्री करोगे तो फिर याद रखो कि हमारा अज़ाब भी बहुत सख़्त है।"

अगर कोई इन्सान किसी दूसरे इन्सान पर एहसान करता है तो हो सकता है कि वह उस एहसान के बदले उस के साथ कुछ भलाई कर दे, चाहे वह कितनी ही थोड़ी क्यों न हो, या उस के कुछ काम आ जाये, लेकिन अल्लाह तआला की ज़ात उस से भी बहुत बुलंद है, न तो कोई शख़्स उस के कुछ काम आ सकता है और न उस के साथ कोई भलाई कर सकता है, उस को किसी तरह की मदद की ज़रूरत नहीं है इस लिये उस की नेमतों का सही शुक्र यह है कि इन्सान दिल से उस की नेमतों की क़द्र करे और उन को ठीक-ठीक उस तरह काम में लाये जिस तरह अल्लाह चाहता हो। अल्लाह तआला के आदेशों पर चल कर उस को राज़ी और ख़ुश कर लेना ही उस की नेमतों का शुक्र है। उस शुक्र पर क़ायम रहने के लिये ज़ुबान से उस की तारीफ़ करना और शुक्र के शब्द बहुत सोच समझ कर कहना बहुत ज़रूरी है।

फिर इस तरह नेमतों का शुक्र अदा करने का

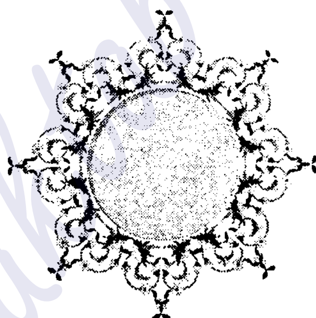
कोई फ़ायदा अल्लाह तआला को नहीं पहुंचता, उस को किसी तरह के फ़ायदे की ज़रूरत नहीं है उस का फ़ायदा भी शुक्र करने वाले को ही मिलता है, उस के नतीजे में उस को और ज़्यादा नेमतें दी जाती हैं और दुनिया व आख़िरत की कामियाबियाँ उसे मिलती हैं। रह गये वह लोग जो उस एहसान करने वाले के मुक़ाबले में सरकशी करते हैं, उस की नेमतों को ग़लत रास्तों में ग़लत तरीक़े से ख़र्च करते हैं, उस के आदेशों और हिदायतों से मुंह मोड़ते हैं, तो वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ते, यह अपना ही नुक़सान कर लेते हैं, क्योंकि अल्लाह तआला इस का मुहताज नहीं है और उस को कोई परवाह नहीं है कि कौन उस की उपासना करता है और कौन उस के मुक़ाबले में सरकशी और बग़ावत का रास्ता अपनाता है। मूसा अलैहिस्सलाम ने साफ़-साफ़ फ़रमाया कि "अगर तुम कुफ़्र करो, और ज़मीन के सारे रहने वाले भी काफ़िर हो जायें, तो अल्लाह बिल्कुल बेनियाज़ है, उस को इस की कोई परवाह नहीं है वह तो ख़ुद बख़ुद तारीफ़ के लायक़ है।" वह इस का मुहताज नहीं कि कोई इस की तारीफ़ (प्रशंसा) करे, उस के अन्दर जो ख़ूबियाँ और गुण हैं वह हमेशा रहने वाले हैं ख़त्म होने वाली और किसी की दी हुई नहीं है। मूसा अलैहिस्सलाम की नसीहत (सतुपदेश) का एक बड़ा हिस्सा तौरात में

मौजूद है उस को देख कर अंदाज़ा होता है कि आप ने बनी इस्राईल की तर्बियत के लिये क्या-क्या सूरतें अपनाई, इस नसीहत में जिन बातों पर ज़ोर दिया गया है उन में से कुछ इस तरह हैं-

1. अल्लाह तआला से जान और दिल के साथ मुहब्बत पैदा करो। उस के उपकार को याद करो और उस की नेमतों को पहचानों।
2. पूरी तरह से राज़ी हो कर और सच्चे दिल के साथ अल्लाह की बन्दगी पर जमे रहो।
3. अल्लाह तआला से मुहब्बत करने और उस के आदेशों के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने की जो हिदायत तुम को दी जा रही है उस को अपनी औलाद के ज़ेहन में भी बिठाओ ताकि तुम्हारे बाद तुम्हारी नस्लों से जो लोग उठें वह अल्लाह तआला की उपासना करने वाले ही हों, नाफ़रमान और बग़ावत करने वाले न हों।
4. घर बैठे, रास्ता चलते, लेटते और उठते अल्लाह के आदेशों और हिदायतों का ज़िक्र करते रहो यानी उस के धर्म के प्रचार का फ़र्ज़ निभाते रहें।
5. अगर तुम अपने ख़ुदा की बात सुनोगे और उसी के अनुसार काम करोगे तो तुम पर बरकतें उतरेंगी, शह्र में भी तुम मुबारक होगे, और खेत

में भी मुबारक, तुम्हारे दुश्मनों की हार होगी, और तुम्हारी जीत होगी, और तुम्हारे हर काम में बरकत ही होगी।





आप के लिये अच्छी पुस्तकें

❖ कुरआन मजीद की विषय तालिका	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ कुरआन क्या है? और क्यों पढ़ें?	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ हयात–ए–तय्यबा	*मौजाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ हज़रत मुहम्मद सल्ल॰ का जीवन परिचय	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ जुमा के ख़ुतबे (अरबी/हिन्दी)	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ इस्लामी इतिहास	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ दीन की बातें	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ इस्लाम की शिक्षा	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ आओ दीन सीखें	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ नबियों के हालात	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ कुरआनी क़िस्से	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ दुआयें (कुरआन व हदीस से मुन्तख़ब)	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ इबादत	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ कभी आप ने सोचा?	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ नमाज़ (तसवीरों के साथ)	*मौलाना मु॰ अब्दुल हई रह॰*
❖ हम क्यों मुसलमान हुये?	*प्रोफ़ेसर अब्दुल ग़नी फ़ारूक़ी*
❖ जन्म से मौत तक	*मौलाना मुहम्मद असद*
❖ हदीस माला	*मु॰ जलील अहसन नदवी*
❖ सुनहरे अक़वाल (कथन)	*एफ़॰ ए॰ मालिक*
❖ हमारे हुज़ूर पाक सल्ल॰	*आबिद निज़ामी*
❖ ज़रूरी मसाइल और दुआयें	*मौलाना मु॰ हनीफ़*
❖ ख़ुलफ़ाए राशिदीन	*नजमा ख़ातून* B.A.